

खंड 3 — भारत में विकासात्मक शासनकाल

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 10 पूँजीवाद, समाजवाद और मिश्रित अर्थव्यवस्था*

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 सामाजिक विकास की प्रकृति और अर्थ

10.3 सामाजिक विकास की प्रचलित धारणाएँ

10.3.1 विकास की तीन दुनिया

10.3.2 सामाजिक विकास के दृष्टिकोण

10.4 स्वतंत्रता के बाद विकास का भारतीय अनुभव

10.4.1 समाजवादी पथ और मिश्रित अर्थव्यवस्था

10.4.2 क्षेत्रीय विकास

10.4.3 सामुदायिक विकास और सहकारी आंदोलन

10.4.4 लक्ष्य समूह नियोजन

10.5 सारांश

10.6 शब्दावली

10.7 उपयोगी पुस्तकें

10.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप:

- सामाजिक विकास की अवधारणा को परिभाषित कर पाएंगे और इसकी प्रकृति का वर्णन कर पाएंगे;
- सामाजिक विकास की प्रचलित धारणाओं का वर्णन कर पाएंगे; और
- विकास के भारतीय अनुभव का लेखा-जोखा दे पाएंगे।

10.1 प्रस्तावना

सामाजिक विकास की अवधारणा को समझने के लिए, उसे वर्षों तक परिभाषित और परिष्कृत किया है? यह इकाई पहले विकास की अवधारणा की व्यापक प्रकृति और अर्थ पर काम करती है। हम सामाजिक विकास पर वर्तमान विचारों का वर्णन करते हैं, जिसमें 'विकास की तीन दुनिया' पर चर्चा और सामाजिक विकास के कुछ हालिया दृष्टिकोण शामिल हैं। अंत में, विकास के मिश्रित मार्ग को देखते हैं, जिनमें भारत भी शामिल है।

10.2 सामाजिक विकास की प्रकृति और अर्थ

विकास एक व्यापक अवधारणा है और यद्यपि यह सामाजिक परिवर्तन से अंतरसंबंधित है,

*प्रो. रवीन्द्र कुमार द्वारा इ.एस.ओ. 11 के इकाई 33 एवं इकाई 34 से अनुकूलित

फिर भी यह सामाजिक परिवर्तन से अलग है। परिवर्तन एक मूल्य-तटस्थ (वैल्यू न्यूट्रल) अवधारणा है, जबकि विकास एक मूल्य युक्त अवधारणा है। दूसरे शब्दों में विकास की धारणा, वांछित परिवर्तन की प्रक्रिया है। परिवर्तन के सभी मामले विकास को इंगित नहीं करते हैं। केवल नियोजित और वांछित बदलावों को विकास के रूप में वर्णित किया जा सकता है। इस प्रकार, विकास की अवधारणा के विशिष्ट चरित्र को ध्यान में रखता महत्वपूर्ण है।

दूसरी बात, हमें विकास की आर्थिक और सामाजिक धारणाओं के बीच अंतर करना होगा। जब आप इकाई को पढ़ते हैं तो यह बिंदु स्पष्ट हो जाता है। सामाजिक विकास की बात करते हुए, हम विकास की प्रक्रिया की सामाजिक तार्किक समझ पर जोर देते हैं। एक व्यापक अवधारणा के रूप में, सामाजिक विकास व्यक्तियों और समाज के समग्र परिवर्तन को संदर्भित करता है, जो प्रत्येक व्यक्ति को नैतिक, सामाजिक भौतिक और सामग्री/पदार्थ प्राप्त करने में सक्षम बना सकता है। समतावादी विकास एक वांछित लक्ष्य है, लेकिन यह केवल एक 'आदर्श' बना हुआ है। विकास के प्रयासों के बावजूद विकास के विभिन्न आयामों में असमानताएं समाजों, क्षेत्रों और समूहों के बीच व्यापक होती जा रही है। जब हम विभिन्न क्षेत्रों या देशों की तुलना करते हैं तो ये विविधताएँ देखी जाती हैं।

ऐसी तुलनाओं में से मुख्य रूप से आर्थिक दृष्टि से अविकसितता की अवधारणा सामने आई है, जैसे कि प्रति व्यक्ति आय, सकल राष्ट्रीय उत्पाद, जीवन स्तर और तकनीकी उन्नति का स्तर। 'ओवर' और 'अंडर' डवलपमेंट के कई मापदंड हैं। उनमें से सबसे सरल सामाजिक उपयोगिता के लिए औद्योगिक क्षमता का अनुपात है। इसका अर्थ है कि जो देश अपनी जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त माल का उत्पादन करने में असमर्थ है, उन्हें अविकसित माना जा सकता है और जो विकसित होते हैं वे आवश्यकता से अधिक उत्पादन करते हैं। अत्यधिक विकसित श्रेणी में अमेरिका जैसे देशों को और अविकसित श्रेणी में कई एशियाई और अफ्रीकी देशों को रखा जा सकता है।

हालांकि, यह एक विवादास्पद बिंदु है कि क्या किसी विशेष देश के साथ अविकसितता और अधिक विकास की पहचान की जा सकती है। इसके अलावा अविकसित शब्द भारत जैसे आर्थिक रूप से कम विकसित देशों में से कुछ के लिए स्वीकार्य नहीं है। ये देश अपने आप को सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से काफी विकसित मानते हैं। वे 'अविकसित' देशों के बजाए 'विकासशील' के रूप में नामित होना पसंद करते हैं।

देशों का वर्गीकरण में निहित एक महत्वपूर्ण विचार, विकसित और विकासशील में, विकासशील के लिए एक 'मॉडल' बन गया। विकासशील देश विकसित देशों की आर्थिक और तकनीकी प्रणालियों की नकल करना या अपनाना पसंद कर सकते हैं। इस वर्गीकरण के बारे में और अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि विकास के वैचारिक अर्थ के संबंध में, यह तथ्य है कि विकासशील देश प्रौद्योगिकी, कौशल और मौद्रिक सहायता के लिए विकसित देशों पर निर्भर थे। विकसित देशों ने विकासशील देशों का शोषण करने की कोशिश की। इसे विकास के निर्भरता सिद्धांत के रूप में जाना जाता है।

विकसित देशों की शोषणकारी प्रवृत्ति का एहसास होने के बाद, विकासशील देशों ने आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होने की कोशिश की। इस प्रकार, आत्मनिर्भरता द्वारा आर्थिक निर्भरता का प्रतिस्थापन विकास का एक महत्वपूर्ण संकेतक बनकर उभरा। आत्मनिर्भरता जितना अधिक होगा, विकास का स्तर उतना ही अधिक होगा। आत्मनिर्भरता के प्रयासों के परिणामस्वरूप विकसित देशों से माल की खरीद को रोककर और उन्हें अपने देश में उत्पादन करके आयात प्रतिस्थापन किया गया।

टिप्पणी:

1) परिवर्तन और विकास के बीच अंतर स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) विकास का निर्भरता सिद्धांत क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

10.3 सामाजिक विकास की प्रचलित धारणाएँ

विकास के बारे में समकालीन समाजशास्त्रीय चिन्ताओं पर आधारित विकास के सांस्कृतिक आयामों की चर्चा के लिए, हम ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित कुछ विचारों की रूपरेखा तैयार करके शुरुआत कर सकते हैं। लेकिन इससे पहले कि हम विकास के बारे में इन प्रमुख चिन्ताओं की जाँच करें, "विकास के तीन संसारों" का संक्षिप्त विवरण देना उपयोगी होगा क्योंकि यह संदर्भ सोवियत संघ के टूटने से पहले से ही मौजूद था। यह 20वीं सदी के मध्य के बाद से सामाजिक वैज्ञानिकों के वार्तालाप (पेरलेस) का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया था। पहले दुनिया को दो भागों में विभाजित किया गया था यानी यह एक द्विध्रुवीय दुनिया थी, जिसमें एक तरफ संयुक्त राज्य अमेरिका (यू.एस.ए.) के पूँजीवादी ब्लॉक थे, दूसरी ओर सोवियत संघ का समाजवादी ब्लॉक था। सोवियत संघ के टूटने के बाद, 'शीत युद्ध' समाप्त हो गया और दुनिया एक ध्रुवीय हो गई है, संयुक्त राज्य अमेरिका दुनिया को सबसे शक्तिशाली राष्ट्र है।

10.3.1 विकास की तीन दुनिया

पहले विश्व में उत्तरी अमेरिका, पश्चिमी और दक्षिणी यूरोप शामिल हैं। देशों को मुख्य रूप से विकास के पूँजीवादी मॉडल के रूप में देखा गया था। दूसरी दुनिया में, सोवियत संघ और पूर्वी युरोपीय समूह जैसे कि पोलैंड और पूर्वी जर्मनी, हंगरी आदि शामिल हैं। इन देशों में अब

कई सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन हुए हैं और वे कम्युनिस्ट खंड नहीं रह गए हैं। वे विकास के समाजवादी मॉडल से जुड़े थे। तीसरा विश्व कुछ हद तक अभी भी आमतौर पर एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के कम विकसित या विकासशील समाजों को दर्शाने के लिए किया जाता था, अभी भी किया जा रहा है। इनमें से अधिकांश देश केवल 20वीं शताब्दी के मध्य में राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए औपनिवेशिक शासन से बाहर निकले। तीसरी दुनिया के अधिकांश देशों की विशेषता कम प्रति व्यक्ति आय, साक्षरता की उच्च दर और शिशु मृत्यु दर है। ये आमतौर पर कृषि आधारित अर्थव्यवस्था थी, जहाँ लोगों की जीवन प्रत्याशा कम थी, सामाजिक गतिशीलता की कम डिग्री और परंपरा के प्रति मजबूत लगाव था (एस्ते, आर.जे. पृष्ठ 92) हालांकि, पहले और दूसरे विश्व के देशों के प्रभाव के अधीन देशों ने अपनी राष्ट्रीय रणनीति और विकास का रास्ता तैयार किया है। पहले और दूसरे दुनिया के विकास के मॉडल ने आर्थिक वृद्धि और विकास पर प्राथमिक जोर दिया था।

i) पहली दुनिया के विकास का पूंजीवादी मॉडल

विकास के पूंजीवादी मॉडल की मुख्य विशेषताएँ हैं।

- a) संपत्ति के निजी स्वामित्व और उत्पादन के साधनों के लिए प्रावधान
- b) निजी उपक्रमों के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देना; और
- c) न्यूनतम संभावित राज्य विनियमन और निजी उद्यमों पर न्यूनतम राज्य नियंत्रण। इस प्रकार प्रतिस्पर्धा द्वारा विनियमित एक मुक्त अर्थव्यवस्था के पूंजीवादी मॉडल की विशेषता है।

ii) दूसरी दुनिया के विकास का समाजवादी मॉडल

दूसरी दुनिया द्वारा अपनाए गए विकास के समाजवादी रास्ते को विकास के पूंजीवादी रास्ते के विपरीत या द्वंद्वात्मक देखा गया। पूंजीवादी मॉडल के विपरीत संपत्ति के राज्य स्वामित्व और उत्पादन के साधनों, सार्वजनिक उद्यमों और आर्थिक गतिविधियों के पूर्ण राज्य विनियमन समाजवादी मॉडल की विशेषता है। पूंजीवादी मॉडल के खिलाफ मुख्य आरोप यह है कि चूंकि यह न्यूनतम राज्य विनियमन की अनुमति देता है, इसलिए इसकी आर्थिक प्रणाली इस अर्थ में शोषणकारी हो जाती है कि मजदूर वर्ग के लोगों (सर्वहारा) को उनका हिस्सा नहीं मिलता है। पूंजीवादी राष्ट्र के संसाधनों के एक बड़े हिस्से का आनंद लेते हैं, इसलिए यह असमानताओं में योगदान देता है ताकि कुछ अमीर हों और बहुसंख्यक बहुत गरीब हो।

इसलिए, पूंजीवादी मॉडल पर शोषणवादी और गैर समतावादी होने का आरोप लगता है। इसके विपरीत, समाजवादी मॉडल को आदर्श रूप से गैर शोषक और समतावादी माना जाता था। निजी स्वामित्व और राज्य विनियमन की कमी को कमजोर वर्गों के शोषण का महत्वपूर्ण साधन माना जाता है और और इसलिए आय असमानताओं का कारण बनता है। चूंकि, समाजवादी राज्य ने संपत्ति के निजी स्वामित्व की अनुमति नहीं दी थी, इसलिए एक मजबूत विश्वास था कि इसमें शोषण और असमानता के लिए कोई जगह नहीं थी। हालांकि, ऐतिहासिक घटनाओं ने इस धारणा को गलत साबित कर दिया क्योंकि सोवियत संघ लंबे समय तक चल नहीं सका। 1980 के दौरान, तत्कालीन रूसी प्रधानमंत्री गोर्बाचेव के नेतृत्व में "ग्लासनॉस्ट" और "पेरेस्ट्रोइका" की अवधि ने साम्यवादी राजनीतिक और आर्थिक संरचना को ध्वस्त कर दिया। सोवियत संघ कई छोटे देशों में टूट गया और समाजवादी विचारधारा ने पूंजीवादी प्रवृत्तियों को जन्म दिया। हालांकि, चीन अभी भी एक सामाजिक राजनीति के व्यवस्था का पालन करता है।

ये दो मॉडल विकास की अपनी अवधारणा में भी भिन्न थे। जहाँ पूँजीवादी मॉडल आर्थिक विकास पर और फिर फलों के समान वितरण की तुलना में आर्थिक विकास पर अधिक जोर देता है, समाजवादी मॉडल ने साधन निर्माण और आय के समान वितरण दोनों पर समान रूप से जोर दिया और सामाजिक व्यवस्था को इस तरह बदलने की कोशिश की जिससे कि अधिक से अधिक सामाजिक न्याय सुनिश्चित किया जा सके। वास्तव में, समाजवादी मॉडल ने व्यक्तिगत पहल और उपभोक्तावादी इच्छाओं को ज्यादा जगह नहीं दी।

पूर्वगामी चर्चा इन मॉडलों के बीच निहित एक और अंतर पर है। पूँजीवादी मॉडल दो वर्गों श्रमिकों और पूँजीपतियों के हितों में कोई बड़ा संघर्ष नहीं देखता है। इसकी नजर में दोनों वर्ग एक दूसरे के पूरक हैं, वे, कार्यात्मक रूप से अन्योन्याश्रित हैं। समाज के नियमों, विशेष रूप से संपत्ति के स्वामित्व और आय के वितरण के बारे में, आम सहमति के आधार पर होने वाले हैं। इसलिए इस मॉडल के अनुसार, आर्थिक संरचना को बदलने की कोई आवश्यकता नहीं है।

इसके विपरीत, समाजवादी मॉडल ने श्रमिकों और पूँजीपतियों के हितों में निहित संघर्ष को देखो। इसके अनुसार, नियम और सर्वसम्पत्ति के आधार पर नहीं बल्कि मजबूत वर्ग द्वारा कमजोर वर्ग पर लगाए जाते हैं। इससे बलवानों द्वारा कमजोरों का शोषण होता है, जिसके परिणामस्वरूप संघर्ष होता है, और षोषित लोगों द्वारा क्रांति में, जो स्वयं व्यवस्था में आमूल परिवर्तन चाहते हैं।

इस प्रकार, पूँजीवादी मॉडल को कभी-कभी कार्यात्मक या सहमति के रूप में नामित किया जाता है, और समाजवादी एक संघर्ष, कट्टरपंथी या क्रांतिकारी मॉडल के रूप में। व्यवहार में जैसा कि कुछ शोधकर्ताओं द्वारा देखा गया है, इन दो मॉडलों ने अभिसरण/असमानता की प्रक्रिया में प्रवेश किया है। उदाहरण के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका में निजी आर्थिक उद्यमों पर एक बड़ा हुआ राज्य विनियमन है। रूस में निजी उद्यमों को अनुदान में छुट दी गई है। कोई भी आय असमानताओं को देख सता है और दोनों दुनिया में राजनीतिक और आर्थिक प्रणालियों में परिवर्तन का विरोध करने की प्रवृत्ति है।

बॉक्स 10.1

एक "तीसरी दुनिया" की अवधारणा यूरोपीय मूल की है। 1940 के दशक में फ्रांस में पीछे तक खोजा जा सकता है क्योंकि दोनों राजनीतिक दलों के विवरण के रूप में डी गॉल के रैसमेन्मेंट डेस पुप्लेफ्रैंसिस और चौथे गणराज्य (सैफायर, 1978) से अलग है। एक अन्य लेखक, कैलीम (1978) ने 'तीसरी दुनिया' के विचार की तुलना 1989 की फ्रांसीसी क्रांति के दौरान पूँजीपति वर्ग द्वारा उठाई गई लेकिन बुर्जुआजी के प्रतिनिधित्व वाली "तीसरी दुनिया" के विचार से की है। वल्फ फिलिप्स (1979) ने 1962 में फ्रेंच डिमोग्राफर, अल्फ्रेड सॉवी को कॉइमिमग शब्द के साथ श्रेय दिया।

हालाँकि "विकास के क्षेत्र" का श्रेय समाजशास्त्री लुई इरविंग हॉरोविट्ज का है। अपनी पुस्तक में, वर्ल्ड ऑफ डेवलपमेंट: द थ्योरी एंड प्रैक्टिस ऑफ इंटरनेशनल स्टार्टिफिकेशन (1972), होराविट्ज ने उन देशों के समूहों के बीच अंतर करने के लिए कई मानदंडों का उपयोग किया है जो सामाजिक आर्थिक विकास के समान या कम समान पैटर्न साझा करते हैं।

हाल के समय में विकास की "चौथी दुनिया" की एक नई अवधारणा विकसित हुई है, जैसा कि पहले मैनुअल और पॉसलुन (1974) और हैमिलियन और कार्ल (1974:13) द्वारा पहचाना गया था। उन्होंने इस अवधारणा का उपयोग "शक्तिहीन, उत्पीड़ित और बिखरे हुए लोगों के समुदाय" का वर्णन करने के लिए किया। उनके अनुसार अन्य सभी "विकास की दुनिया" अर्थात् पहला, दूसरा और तीसरा, उन लोगों को साझा करते हैं जो विकास की चौथी दुनिया से संबंधित हैं। वर्तमान उपयोग में जो देश पहली दुनिया के हैं, उन्हें "विकसित बाजार अर्थशास्त्र" (डीएमई) के रूप में जाना जाता है, दूसरी दुनिया से संबंधित लोगों को "पूर्वी व्यापारिक क्षेत्र (ईटीए) के रूप में जाना जाता है, तीसरी दुनिया से संबंधित लोगों को "विकासशील देशों" के रूप में जाना जाता है। चौथी दुनिया के देशों को सबसे कम विकासशील देशों (एलडीसी) के रूप में जाना जाता है। (एस्टीज में उद्धृत, सिचर्ड जे की दुनिया का विकास www.google.com वेबसाइट)

iii) तीसरी दुनिया का विकास

तीसरी दुनिया के अधिकांश देशों द्वारा अपनाए गए विकास के मॉडल को निर्दिष्ट करना मुश्किल है, जैसा कि उनके बीच भिन्नताएँ हैं, जो मुख्य रूप से उनकी ऐतिहासिक और सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों द्वारा तय की गई हैं। जो कुछ वे साझा करते दिखते हैं, वह यह है:

- क) वे तथाकथित विकसित दुनिया के देशों की तुलना में आर्थिक और तकनीकी रूप से अविकसित हैं।
- ख) सामाजिक नियोजन उनकी विकास प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण तत्व है। विकास की उनकी योजनाओं में न केवल आर्थिक चिंताएँ शामिल हैं, विशेष रूप से गरीबी हटाने के लिए ही नहीं बल्कि राष्ट्र निर्माण, राष्ट्रीय संस्कृति और सामाजिक परिवर्तन के बारे में भी चिंताएँ हैं।
- ग) वे विकसित देशों से तकनीकी और आर्थिक सहायता मांग रहे हैं। विकसित देशों ने उन्हें आर्थिक सहायता दी है, लेकिन वे भी विकासशील देशों में अपने राजनीतिक प्रभाव को बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। यह नोट किया गया है कि विकासशील देशों के लिए अपने आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव को बढ़ाने में वैश्विक सैन्य रक्षण नीति विकसित देशों का प्रमुख विचार है।

वास्तव में, तीसरी दुनिया का विचार विकासशील देशों के बीच उभरती इस चेतना के साथ जुड़ा हुआ है कि मौद्रिक मदद और विशेषज्ञ सलाह के बदले उनका विकसित देशों द्वारा शोषण किया जा रहा है।

कुछ राष्ट्र शोषण के प्रति बहुत पहले सचेत हो गए थे; लेकिन अन्य, इस तथ्य को विकासशील देशों में बड़ी शक्तियों की विनाशकारी भूमिका, उदाहरण के लिए वियतनाम में यूएसए की भूमिका या अफगानिस्तान में यूएसएसआर को देखने के बाद ही समझ पाए। सामाजिक विश्लेषकों ने मदद की सराहना करने के साथ-साथ विकासशील देशों में बड़ी शक्तियों के 'खेल' का विश्लेषण करने से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पहली, दूसरी और तीसरी दुनिया के बारे में जानकारी की इस पृष्ठभूमि में अब हम दुनिया भर में विकास के बारे में प्रचलित कुछ धारणाओं को देखेंगे।

सोचे और करें 1

पूँजीवाद, समाजवाद और
मिश्रित अर्थव्यवस्था

अपने दादा की पीढ़ी के कम से कम पाँच लोगों का साक्षात्कार करें और उनसे पहले और दूसरे विश्व युद्धों की उनकी यादों के बारे में पूछें। "भारतीय समाज पर प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के प्रभाव" पर एक पृष्ठ नोट लिखें। अपने अध्ययन केंद्र में अन्य छात्रों के नोट के साथ अपने नोट की तुलना करें।

बोध प्रश्न II

टिप्पणी:

1) दो देशों के नाम, जो विकास के पूँजीवादी मॉडल का पालन करते हैं।

.....
.....

2) रिक्त स्थान भरें।

a) प्रथम विश्व युद्ध मुख्य रूप से विकास एक मॉडल की विशेषता थी।

a) दूसरी दुनिया के देशों ने विकास के एक मॉडल को अपनाया है।

3) उन देशों की सूची बनाएं जिन्हें आमतौर पर तीसरी दुनिया के देशों के रूप में पहचाना जाता था।

.....
.....
.....
.....

4) तीसरी दुनिया या विकासशील देशों द्वारा साझा की गई तीन सामान्य विशेषताएं क्या हैं?

.....
.....
.....
.....
.....

अब हम सामाजिक विकास के दृष्टिकोण पर चर्चा करते हैं।

10.3.2 सामाजिक विकास के लिए दृष्टिकोण

विकास के दृष्टिकोण/उपागम पर दो मानदंडों के आधार पर विचार किया जा सकता है, (i) केंद्रीकरण बनाम विकास योजनाओं और संसाधनों का विकेंद्रीकरण, (ii) विकास की इकाई, अर्थात्, विकास का ध्यान केंद्र—व्यक्ति, समूह, गाँव आदि। पहली कसौटी ने दो दृष्टिकोणों को जन्म दिया, अर्थात् शीर्ष से विकास और सतह से विकास। दूसरी कसौटी तीन दृष्टिकोण— क्षेत्रीय विकास, क्षेत्र विकास और लक्ष्य समूह विकास को जन्म देती है। आइए अब हम संक्षेप में पाँचों दृष्टिकोण की समीक्षा करते हैं।

i) शीर्ष से विकास

शीर्ष से विकास का दृष्टिकोण प्रशासन के केंद्रीय या सर्वोच्च निकायों द्वारा विकास योजनाओं की योजना और निष्पादन की परिकल्पना करता है। दूसरे शब्दों में, केंद्रीय संगठन योजना की प्रकृति और दिशा तय करते हैं, परियोजनाएँ बनाते हैं और उन्हें लोगों पर लागू करते हैं। उदाहरण के लिए, राजधानी में बैठे मंत्री और उच्च अधिकारी ग्रामीण लोगों की समस्याओं को पूरी तरह से समझे बिना उनके लिए विकास योजनाएँ बनाते हैं।

इस दृष्टिकोण में निहितार्थ यह धारणा है कि जिन लोगों को विकास की आवश्यकता हाती है, वे अपनी जरूरतों को समझने, विकास योजनाओं को तैयार करने और उन्हें अपने दम पर निष्पादित करने में समक्ष नहीं हैं। इसलिए विशेषज्ञों और बाहरी उपक्रमों की आवश्यकता है। वास्तव में यह अवधारणा निराधार है। इस तरह की धारणा बनाने में शीर्ष पर आसीन अभिजात वर्ग के लोगों का निहित स्वार्थ है। उनकी प्रमुख रुचि संसाधनों पर नियंत्रण रखना और उन्हें अपने लाभ के लिए जुटाना है। लोग विकास योजनाओं को स्वीकार करते हैं, क्योंकि उनके पास न तो स्वयं के पर्याप्त संसाधन हैं और न ही समुदाय के संसाधनों पर कोई नियंत्रण है। परिणामस्वरूप, शीर्ष से लगाई गई अधिकांश योजनाएँ वांछित परिणाम प्राप्त करने में विफल रहती हैं।

ऐसा ज्यादातर मामलों में होता है। विकास योजनाओं के धन का एक बड़ा हिस्सा एक या दूसरे तरीके से विशेषज्ञों, अधिशासी अधिशासी अधिकारियों द्वारा खाया जाता है, चाहे वह सरकारी हो या कोई विदेशी एजेंसी। इस दृष्टिकोण की बड़ी कमी यह है कि यह लाभार्थियों को विकास प्रक्रिया में शामिल करने में विफल रहता है। इसके बजाए यह उनके बीच अलगाव की भावना उत्पन्न करता है। इन कारणों से यह दृष्टिकोण उच्च स्तरीय केंद्रीकरण और नौकरशाही के विशेषता से संबद्ध है।

ii) सतह से विकास

इसके विपरीत, सतह से विकास वाले दूसरे दृष्टिकोण के प्रतिपादक, विकास की आवश्यकता वाले लोगों के इरादों और क्षमताओं की निष्पक्षता पर विश्वास करते हैं। उन्हें अपनी समस्या को स्पष्ट करने के साथ-साथ उन्हें हल करने का तरीका भी दिया जाता है। उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है और उन्हें सक्षम बनाया जाता है और स्वयं सहायता के लिए तैयार किया जाता है। विकास योजनाओं के लिए संसाधनों का उपयोग संबंधित लोगों द्वारा स्वयं या स्थानीय स्तर पर उनके प्रतिनिधियों द्वारा तय किया जाता है। इस प्रकार, योजनाओं का अधिक विकेंद्रीकरण होता है और लोगों की अधिक भागीदारी होती है।

हालांकि नियाजकों को सतह से विकास के महत्व का एहसास है और वे दावा करते हैं कि वे इस दृष्टिकोण को अपनाते हैं, असल व्यवहार में, वे अक्सर शीर्ष से विकास के दृष्टिकोण को ही अपनाते हैं। परिणामस्वरूप विकास योजनाएँ निष्प्रभावी होती हैं।

पूँजीवाद, समाजवाद और
मिश्रित अर्थव्यवस्था

iii) क्षेत्रीय विकास

जैसा कि पहले उल्लेख किया है, विकास की 'इकाई' के आधारपर, तीन दृष्टिकोण परिकल्पित हैं, अर्थात् क्षेत्रीय विकास, क्षेत्र विकास और लक्ष्य समूह विकास। क्षेत्रीय विकास दृष्टिकोण कृषि या उद्योग जैसी अर्थव्यवस्था के किसी विशेष क्षेत्र के लिए, विकास के लिए योजनाओं के निर्माण और क्रियान्वयन को संदर्भित करता है। उदाहरण के लिए, भारतीय योजनाकारों ने आजादी के ठीक बाद उद्योगों को विकसित करने के बारे में सोचा। इसलिए उन्होंने प्रौद्योगिकी विकसित करने या इसे अन्य देशों से उधार लेने की योजना बनाई। तकनीकी शिक्षा पर जोर दिया गया। कई संस्थानों और कॉलेजों की स्थापना, स्वतंत्र रूप से या अन्य देशों जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और इंग्लैंड के सहयोग से की गई।

दूसरी तरफ, कपड़ा, इस्पात और सीमेंट जैसे भारी उद्योगों के लिए धन उपलब्ध कराया गया था। बाद में, जब देश को पहले साथ के दशक में खाद्य समस्या का सामना करना पड़ा, तो योजनाकारों ने कृषि क्षेत्र को विकसित करने के बारे में सोचा। परिणामस्वरूप, कई कृषि विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई, जिन्होंने श्रेणियों जैसे फसलों, कीटनाशकों और कीटनाशकों की उच्च उपज देने वाली किस्मों और कृषि उपकरणों को विकसित करने में मदद की। किसानों को शिक्षित करने और उन्हें नई कृषि तकनीक अपनाने के लिए मनाने के लिए विस्तार सेवाएँ उपलब्ध कराई गई और किसानों को उदारतापूर्वक ऋण दिया गया। आपने हरित क्रांति के रूप में इन प्रयासों के परिणाम देखे हैं। देश अब भोजन में लगभग आत्मनिर्भर है।

iv) क्षेत्र विकास

सभी क्षेत्र समान रूप से विकसित नहीं हैं। कुछ दूसरों की तुलना में अधिक समृद्ध हैं। क्षेत्रों का अविकसित विकास, ढांचागत विकास सड़कों, रेलवे विद्युतीकरण आदि की कमी या बाढ़ और सूखे की समस्याओं के कारण है। जब क्षेत्र या क्षेत्रों के ढांचागत विकास के लिए योजनाएँ तैयार की जाती हैं, तो हम इसे क्षेत्र विकास दृष्टिकोण कहते हैं। कमांड क्षेत्र विकास योजना जो भारत में 1974 में कुछ क्षेत्रों में सिंचाई संसाधनों के विकास के लिए शुरू की गई थी इस दृष्टिकोण को चित्रित करती है।

v) लक्ष्य समूह विकास

लक्ष्य समूह के दृष्टिकोण एक विशेष श्रेणी के लोगों, जैसे छोटे विशेष श्रेणी के लोगों, जैसे छोटे किसानों, महिलाओं और खेत मजदूरों पर अपना ध्यान केंद्रित करता है। लघु कृषक विकास एजेंसी (एसएफडीए) जैसी योजनाओं और स्कूलों और कॉलेजों में सीटों का आरक्षण और अनुसूचित जातियों के लिए रोजगार दिलाने में आरक्षण में, लक्ष्य समूह के दृष्टिकोण का अनुसरण किया जाता है। विकास के लिए एक और दृष्टिकोण है, जिसका ध्यान एक क्षेत्र गाँव या कस्बे में रहने वाले लोगों के समग्र विकास पर केंद्रित रहता है। इसे सामुदायिक विकास दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है। यह दृष्टिकोण शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं, आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों और अन्य अवसरचक्रात्मक सुविधाओं के विकास पर जोर देता है।

सोचें और करें 2

अपने क्षेत्र में स्थानीय खंड विकास अधिकारियों (वीडीओ) के कार्यालय का दौरा करें और इस क्षेत्र में चल रही विकास गतिविधियों के संबंध में वहाँ काम करने वाले एक या दो अधिकारियों का साक्षात्कार लें। आपके क्षेत्र में विभिन्न समुदायों पर प्रकृति और प्रकार के कार्यक्रम चल रहे हैं और इसका प्रभाव है। "सामाजिक विकास और सरकारी की भूमिका" पर एक पृष्ठ की रिपोर्ट लिखें अपने अध्ययन केंद्र में अन्य छात्रों के साथ अपने नोट की तुलना करें और अपने शैक्षणिक काउंसलर के साथ अपने निष्कर्षों पर चर्चा करें।

बोध प्रश्न II

टिप्पणी:

- 1) आर्थिक वृद्धि समाज के सभी वर्गों के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए एक पर्याप्त और आवश्यक शर्त है। सही बॉक्स पर टिक करें।

हाँ ☐ नहीं ☐

- 2) विकास के सामाजिक सांस्कृतिक आयामों की सूची बनाइए। अपना उत्तर चार पंक्तियों में दें।

.....

.....

.....

.....

.....

- 3) सामाजिक विकास के पाँच दृष्टिकोण क्या हैं? उत्तर सात पंक्तियों में दें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

10.4 स्वतंत्रता के बाद विकास का भारतीय अनुभव

सामाजिक आर्थिक जीवन के लगभग सभी आयामों, जैसे स्वास्थ्य शिक्षा, जनसंख्या नियंत्रण, उद्योग, परिवहन, सिंचाई, संचार और कृषि में विकास की योजनाएँ बनी हैं। यहाँ सभी विकास

योजनाओं की सूची प्रस्तुत करना न तो संभव है और न ही आप इन सभी के बारे में जानते हैं। इसलिए हमारा मुख्य उद्देश्य भारत में समकालीन विकास योजनाओं का एक दृष्टिकोण प्रस्तुत करना है, जिसे आजादी के बाद, विकास के कुछ दृष्टिकोणों का वर्णन करने के लिए शुरू किया गया था, इसकी पूर्ववर्ती खंड में चर्चा की गई थी।

स्वतंत्रता के बाद, भारत ने पहले या दूसरी दुनिया का अनुसरण नहीं किया, उसने न तो पूँजीवादी (उत्तर अमेरिकी) और न ही विकास का समाजवादी मॉडल अपनाया। इसने दो मॉडलों के बीच में विकास का रास्ता अपनाया, जिसे 'मिश्रित अर्थव्यवस्था' के रूप में जाना जाता है। एक ओर, भारत ने निजी व्यापार और उद्योग को प्रोत्साहित किया और बड़े व्यापारिक घरानों का मौका दिया, जैसे कि बिड़ला और टाटा और अन्य मध्यम और छोटे आकार के उद्यमी। दूसरी ओर कम से कम सिद्धांत के रूप में, समग्र रूप से उद्यमशीलता और व्यावसायिक गतिविधियों पर इसका लगभग पूर्ण नियंत्रण है।

10.4.1 समाजवादी पथ और मिश्रित अर्थव्यवस्था

राज्य भारी/बड़े उद्योग स्थापित करने में एक उद्यमी के रूप में भी कार्य करता है, जैसे कि इस्पात का निर्माण और बिजली का उत्पाद। बैंक का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया है। राज्य का रेलवे और डाक विभागों पर पूरा नियंत्रण है। ये उपाय विकास के एक समाजवादी रास्ते के बारे में बता रहे हैं। दूसरी ओर, कुछ उद्योग निजी उद्यमियों के लिए आरक्षित हैं— छोटे और बड़े दोनों कुछ उद्योगों में, जैसे कपड़ा और सीमेंट, दोनों निजी और राज्य उद्यमों को संचालित करने की अनुमति दी गई है। कई अन्य गतिविधियों में भी, जैसे कि शिक्षा स्वास्थ्य और परिवहन दोनों निजी और राज्य एजेंसियाँ काम करती हैं, या तो स्वतंत्रता रूप से या सहयोग से।

यह सच है कि भारत ने विकास का एक 'मिश्रित' मार्ग अपनाया, लेकिन अर्थव्यवस्था की वास्तविक कार्यप्रणाली के बारे में विद्वानों की राय अलग है। एक दृष्टिकोण यह है कि भारत के विकास का मार्ग पूँजीवादी है। भारी/बड़े उद्योगों में राज्य का प्रवेश, वास्तव में निजी उद्यम का समर्थन करने के लिए था, इस अर्थ में कि इन उद्योगों ने उच्च लाभ नहीं दिया था और एक लंबी निर्माण पूर्व अवधि और उच्च पूँजी निवेश की आवश्यकता थी। अतः वे निजी उद्यमियों को आकर्षित नहीं कर पाये थे, और इसी समय पर बुनियादी/मूलभूत उद्योगों के बिना औद्योगिक विकास संभव नहीं था। इसी तरह, यह तर्क दिया गया है कि अभी भी बड़े उद्यम छोटे उद्यमों पर और कृषि क्षेत्र पर औद्योगिक क्षेत्र हावी हैं। कुछ बड़े व्यावसायिक घरानों में आर्थिक शक्ति का सकेन्द्रण भी है। अन्य दृष्टिकोण यह है कि हमारा पूर्वाग्रह एक समाजवादी मॉडल की ओर बढ़ रहा है, जैसा कि बैंको के राष्ट्रीयकरण जैसे तथ्यों से स्पष्ट है। ये विवादास्पद तर्क हैं जिन्हें यहाँ संग्रहीत नहीं किया जा सकता है। तथ्य यह है कि भारत विकास के 'मिश्रित' मार्ग का अनुसरण करता है।

10.4.2 क्षेत्रीय विकास

इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत ने औद्योगिक और कृषि क्षेत्रों में बहुत प्रगति की है, लेकिन कृषि क्षेत्र में अपेक्षाकृत कम प्रगति हुई है। कई नीतियों और योजनाओं को अपनाया गया था, जो परिणाम दिखाते थे, वे अपेक्षाओं से बहुत कम थे। आजादी के बाद कृषि के विकास की प्रमुख नीतियाँ थी: भूपति उन्मूलन (जमींदारी उन्मूलन), भूमि का समेकन और भूमि की अधिकतम सीमा निर्धारण। जबकि पहली दो नीतियाँ आगे बढ़ी, आखिरी को बड़े किसानों के निहित स्वार्थों सहित कई कारकों के कारण अप्रभावी बना दिया गया। हालाँकि जनसंख्या

में वृद्धि के कारण खेत के आकार का प्राकृतिक कांट-छांट वियतकरण हुआ है और यह है कि खेत के आकार पर अधिकतम सीमा, उत्पादकता बढ़ाने के रास्ते में आएगी। ये सभी नीतियाँ एक क्षेत्रीय विकास के दृष्टिकोण को दर्शाती हैं।

क्षेत्रीय दृष्टिकोण को क्रमशः 'हरी' और 'श्वेत' क्रांतियों, अर्थात् नकदी फसलों के विकास और दुग्ध (डेयरी) उत्पादों के विकास में मिला। इस तरह की क्रांतियाँ व्यापक रूप से नहीं हुई हैं। वे कुछ राज्यों, जैसे पंजाब, तमिलनाडु, गुजरात और महाराष्ट्र तक सीमित हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि इन राज्यों में भी, किसानों को कृषि उत्पाद से लाभकारी मूल्य नहीं मिलते हैं, क्योंकि कृषि आदानों—यंत्रों, उर्वरकों, कीटनाशकों इत्यादि की कीमतों में वृद्धि पर कोई रोक नहीं है, जो औद्योगिक क्षेत्र से आते हैं और खेत के उत्पादन की कीमतों पर सख्त नियंत्रण के कारण, इस तर्क के साथ कि खाद्यान्न की कीमतों में उच्च वृद्धि से आम जनता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। यह कृषि क्षेत्र के प्रति भेदभाव को दर्शाता है। अधिकांश लोग आज भी कृषि पर निर्भर हैं। इसलिए अलाभकारी कृषि उत्पाद मूल्य कृषि वर्गों को गरीबी में रखता है।

10.4.3 सामुदायिक विकास और सहकारी आंदोलन

इस क्षेत्रीय दृष्टिकोण के अतिरिक्त, गांवों के समग्र विकास के लिए 1952 में एक सामुदायिक विकास योजना शुरू की गई थी। इस कार्यक्रम का दर्शन लोगों को शिक्षित करना था, अपने स्वयं के प्रयासों और संसाधनों से खुद को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करना था। लेकिन कार्यक्रम बहुत सफल नहीं रहा। यह महसूस किया गया कि विकास योजनाओं की तैयारी और निष्पादन में ग्रामीण लोगों की अधिक भागीदारी आवश्यक थी। दूसरे शब्दों में, इसके लिए अधिक से अधिक प्रशासनिक विकेंद्रीकरण की आवश्यकता थी। इसलिए पंचायत राज्य प्रणाली 1957 में शुरू की गई थी। इसने त्रिस्तरीय प्रणाली की परिकल्पना की ग्राम पंचायत (ग्राम स्तर), पंचायत समिति (ब्लॉक स्तर) और जिला परिषद (जिला स्तर)। इस प्रणाली में विकास योजनाओं की योजना और निष्पादन दोनों में स्थानीय स्तर पर लोगों को शामिल किया गया था। यह सतह से विकास की दिशा में एक प्रयास था। लेकिन दुर्भाग्य से ग्रामीण अभिजात वर्ग (अमीर किसान), एक तरफ और प्रशासनिक और राजनीतिक कुलीन वर्ग, दूसरी ओर ब्लॉक स्तर और जिला स्तर पर, के बीच अपवित्र गठबंधन ने व्यवस्था को कमजोर बना दिया।

वही हाल सहकारी आंदोलन का भी हुआ। भारत सहकारी खेती चीनी पैटर्न पर करना चाहता है, जिसमें भूमि समुदाय (गाँव) की है और किसानों के पास उनके हिस्से हैं। लेकिन यह देश की राजनीतिक प्रणाली के कारण भारत में काम नहीं करता था, जिसने भूमि के निजी स्वामित्व को खत्म करने की अनुमति नहीं दी थी, और क्योंकि किसानों ने स्वेच्छा से समुदाय को आत्मसमर्पण नहीं किया था, विनोबा भावे का आंदोलन भूदान (भूमिदा) के बावजूद भी। हालांकि क्रेडिट सोसाइटीज, जिन्होंने अल्पकालिक कृषि ऋण दिया था, लोकप्रिय हो गई। लेकिन आज कई क्रेडिट ऋण समितियों सोसाइटी असफल हो गई, या प्रभावी ढंग से काम नहीं कर रही हैं। क्योंकि उधारकर्ता सदस्य आमतौर पर चूककर्ता बन जाते हैं। महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि स्थानीय लोगों के बीच सहयोग करने की कोई भावना नहीं है, क्योंकि इन सहकारी समितियों के अधिकांश मामलों का प्रबंधन सरकार या अर्ध सरकारी अधिकारियों द्वारा किया जाता है, जैसे कि रजिस्ट्रार, प्रबंध निदेशक, प्रशासक आदि। कई मामलों में राष्ट्रीयकृत बैंक अपने सदस्यों को ऋण देने के लिए सहकारी समितियों को धन प्रदान करते हैं। ग्रामीण क्रेडिट कोऑपरेटिव (ऋण देने वाली सहकारी समितियाँ) महाराष्ट्र में अपेक्षाकृत प्रभावी हैं, खासकर गन्ना उत्पादकों के बीच, जिनके पास सहकारी चीनी मिलें भी हैं। अन्य क्षेत्रों में भी, गुजरात में आनंद में सहकारी समितियों के असाधारण रूप से सफल मामले हैं। आनंद मिल्क प्रोड्यूसर्स यूनियन लिमिटेड (ए एम यू एल) आनंद गांव में किसानों के सहकारी

प्रयासों से उभरा, जो अब एशिया में ग्रामीण सहकारी समितियों के बीच एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

पूँजीवाद, समाजवाद और
मिश्रित अर्थव्यवस्था

10.4.4 लक्ष्य समूह नियोजन

20 बिंदू वाले आर्थिक कार्यक्रमों के तहत कुछ लक्षित समूहों के लिए कई अन्य ग्रामीण विकास कार्यक्रम हैं। एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम (आई आर डी पी) उनमें से एक है, जो क्षेत्र विकास और लक्ष्य समूह दृष्टिकोण दोनों को जोड़ता है, क्योंकि इसमें कमांड क्षेत्र विकास कार्यक्रम (कमांड एरिया डेवलपमेंट प्रोग्राम) शामिल है: सूखा क्षेत्र कार्यक्रम और छोटे किसानों की विकास एजेंसी। एक लक्ष्य समूह कार्यक्रम के रूप में, इसका ध्यान सबसे गरीब लोगों पर केंद्रित है, और सहायता की इकाई 'परिवार' है, न कि कोई व्यक्ति। यह पाँच साल की अवधि में प्रत्येक ब्लॉक में लगभग 3000 परिवारों को शामिल करने का प्रस्ताव करता है। आई आर डी पी के तहत रोजगार के लिए विशेष कार्यक्रम हैं, जैसे ग्रामीण युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षण (टीआरवाईएसईएम)। इसके अतिरिक्त अन्य कार्यक्रम भी हैं जैसे राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम (एन आर ई पी)। हालाँकि इन कार्यक्रमों की मूल्यांकन रिपोर्ट वास्तविक लाभार्थियों तक पहुँचने और उनकी आर्थिक स्थिति बढ़ाने में कार्यक्रम की विफलता का संकेत देती है। दोष कार्यकारी कर्मियों और ग्रामीण अभिजात वर्ग पर लगाया जाता है, जो इन कार्यक्रमों के संसाधनों का एक बड़ा हिस्सा उपभोग करते हैं। अन्य क्षेत्रों में भी भारत ने अच्छी प्रगति की है। हमारे पास बड़े अस्पताल और प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल केंद्र हैं। जीवन प्रत्याशा में वृद्धि हुई है और मलेरिया, पोलियो और चेचक जैसी कई बीमारियों को नियंत्रित किया गया है, और शिशु मृत्यु दर में कमी आई है। अब हमारे पास परिवहन और संचार का एक बड़ा नेटवर्क है। लेकिन विकास का परिणाम बड़े पैमाने पर शहरी आबादी तक पहुँच गया है। ग्रामीण लोगों के पास अभी भी अच्छे स्कूल उचित विद्युतीकरण, साफ पानी और अस्पताल नहीं हैं। कई प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल केंद्रों में कोई अच्छे शिक्षक या स्कूलों में उचित आधारभूत संरचना नहीं है, जैसे कि फर्नीचर, जिसमें कई स्कूलों में ब्लैकबोर्ड भी शामिल हैं और कोई डॉक्टर नर्स या दवाएँ नहीं हैं। इसके अतिरिक्त हम बढ़ी हुई बेरोजगारी, अधर्म की स्थिति सामाजिक और सांप्रदायिक तनाव में वृद्धि और सामाजिक और राष्ट्रीय कल्याण चिंता की कमी पाते हैं। इससे पता चलता है कि देश ने गुणात्मक विकास की तुलना में अधिक मात्रात्मक हासिल किया है।

हालाँकि, सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक जागरूकता के मामले में भारत और उसके गाँव काफी अच्छा कर रहे हैं। एक अत्यंत जीवंत राजनीतिक और आर्थिक संरचना के साथ, दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देशों में से एक होने के नाते, सामुदायिक तनाव की कुछ मात्रा अपरिहार्य है। सरकारी नीतियाँ अत्यधिक असामनताओं को दूर करने और सामाजिक न्याय लाने के लिए तैयार हैं।

बोध प्रश्न III

1) भारत की स्वतंत्रता के बाद विकास के किस मार्ग का अनुसरण किया गया है?

.....

.....

- 2) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम (आई आर डी पी) क्षेत्रीय विकास का एक उदाहरण है। सही बॉक्स पर टिक करें।

हाँ

☐

नहीं

☐

10.5 सारांश

इस इकाई ने समझाया है कि आर्थिक विकास की तुलना में विकास बहुत व्यापक अवधारणा है। इसमें लोगों के सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, शैक्षिक, शारीरिक और मानसिक विकास शामिल हैं। हमने सामाजिक विकास के बारे में प्रचलित विचारों पर चर्चा की। तब हमने सामाजिक विकास के पाँच दृष्टिकोणों की समीक्षा की अंत में हमने विकास के मिश्रित मार्ग का वर्णन किया, अर्थात् पूँजीवाद और समाजवाद का एक संयोजन, जिसका भारत आज अनुसरण कर रहा है।

10.8 शब्दावली

जातीय केंद्रित (ethnocentric) : अपने ही समूह की श्रेष्ठता में विश्वास

सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी) : यह एक निश्चित समयाधि में आमतौर पर एक वर्ष में अर्थव्यवस्था द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का कुल प्रवाह है। इस शुद्ध आय से विदेशों में प्रवाह जोड़ा जाता है और बहिर्वाह को घटाया जाता है।

बुर्जुआ और सर्वहारा वर्ग : पूँजीपति वर्ग बुर्जुआ वर्ग के रूप में जाना जाता है। इसमें औद्योगिक, वित्तीय और व्यापारिक पूँजीपति शामिल हैं। वे औद्योगिक, व्यापारिक और वित्तीय उद्यमों के मालिक हैं उनका नियंत्रण करते हैं। वे अपने लाभ और उद्यमों के विस्तार के लिए श्रमिक वर्ग का शोषण करते हैं। वे पूँजीवादी समाज में प्रमुख वर्ग का गठन करते हैं। लेकिन सर्वहारा वर्ग के रूप में जाना जाने वाला श्रमिक वर्ग शोषित और शक्तिहीन वर्ग है। यह वर्ग उत्पादन का साधन नहीं है। मजदूर अपनी आजीविका कमाने के लिए पूँजीवादी उद्यमों में मजदूरी के लिए काम करते हैं।

मिश्रित अर्थव्यवस्था

: भारत ने स्वतंत्रता के बाद देश के आर्थिक विकास के लिए 'मिश्रित अर्थव्यवस्था' का रास्ता अपनाया

है। मिश्रित अर्थव्यवस्था की अवधारणा राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र दानों के सहअस्तित्व को संदर्भित करती है। सार्वजनिक क्षेत्र का स्वामित्व और नियंत्रण सरकार द्वारा किया जाता है, लेकिन निजी क्षेत्र का स्वामित्व और संचालन व्यक्तियों, परिवारों या निजी निकायों द्वारा किया जाता है।

पूँजीवाद, समाजवाद और
मिश्रित अर्थव्यवस्था

10.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- गोर, एम, एस, 1973 सम एसपेक्टस ऑफ सोशल डेवलपमेंट टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस, मुंबई।
- पांडेय, आर, 1985 सोशोलॉजी ऑफ डेवलपमेंट: कॉनसेप्ट, थ्योरीज एण्ड ईशुज़ मित्तल पब्लिशर, नई दिल्ली।
- शर्मा, एस.एल. (संपादक) 1986 डवलपमेंट: सोशियो कल्चरल डाईमेंशनस रावत पब्लिकेशन, जयपुर

10.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

- 1) परिवर्तन एक मूल्य-तटस्थ अवधारणा है जबकि विकास एक मूल्य युक्त अवधारणा है। केवल नियोजित वांछित परिवर्तनों को ही विकास कहा जा सकता है।
- 2) विकासशील देश तकनीकी और वित्तीय सहायता के लिए विकसित देशों पर निर्भर हैं। इस सहायता को प्रदान करने की प्रक्रिया में, विकसित देश विकासशील देशों का शोषण करने का प्रयास करते हैं। इस दृश्य को विकास का निर्भरता सिद्धांत कहा जाता है।

बोध प्रश्न II

- 1) संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम
- 2) a) पूँजीपति b) समाजवादी
- 3) भारत, पाकिस्तान, थाईलैंड, वियतनाम, वेनेजुएला, निकारागुआ इन देशों को आम तौर पर तीसरी दुनिया के देशों या विकासशील देशों के रूप में पहचाना जाता है।
- 4) तीसरी दुनिया के देशों द्वारा साझा की जाने वाली सामान्य विशेषताएँ हैं:
 - a) अविकसित अर्थव्यवस्था और प्रौद्योगिकी
 - b) विकास का एक व्यापक अर्थ, जिसमें सामाजिक परिवर्तन शामिल है।
 - c) तीसरी दुनिया के देशों को विकसित देशों द्वारा अपने हुक्म का पालन करने के लिए दबाव डाला गया था।

बोध प्रश्न III

- 1) नहीं
- 2) विकास के सामाजिक- सांस्कृतिक आयाम बुनियादी जरूरतों, आवश्यक सुविधाओं की उपलब्धता, आर्थिक कल्याण शैक्षिक विकास की पहुँच, सामाजिक एकीकरण और समाज में असमानताओं को कम करने के लिए उचित संतुष्टि हैं।
- 3) केंद्रीकरण और विकास योजनाओं और संसाधनों के विकेंद्रीकरण के दो मानदंडों पर आधारित, सामाजिक विकास के पाँच दृष्टिकोण हैं:
 - a) शीर्ष से विकास
 - b) सतह से विकास
 - c) क्षेत्रीय विकास
 - d) क्षेत्र विकास
 - e) लक्ष्य समूह विकास

बोध प्रश्न IV

- 1) भारत ने विकास के एक 'मिश्रित मार्ग' का अनुसरण किया है। भारत निजी व्यापार और उद्योग को प्रोत्साहित करता है और उद्यमशीलता और व्यावसायिक गतिविधियों पर लगभग पूर्ण नियंत्रण रखता है। इसने हाल ही में क्षेत्र विकास और लक्ष्य समूह विकास पर ध्यान केंद्रित करना शुरू किया है, इस प्रकार विकास के सामाजिक सांस्कृतिक आयामों का ध्यान रखा गया है।
- 2) नहीं।

संदर्भ

- बर्जर, पीटर, 1963. इनवेंशन ऑफ सोशालॉजी. डैनबल डे एण्ड कॉर्पोरेशन: नई दिल्ली।
- बॉटमोर, आर्.बी. 1987 सोशालॉजी: ए गाइड टु प्रोब्लम्स एण्ड लिटरेंचर एलन एण्ड अनविन: लंदन।
- बार्ले, एच.सी. 1965 द नेचर ऑफ सोशल कंट्रोल. इन जोसेफस एस. रूसेक एटल (संपादक) सोशल कंट्रोल। एफिलेटेड इस्ट वेस्ट प्रेस : नई दिल्ली।
- कोसर, लुईस, 1956 द फंक्शन ऑफ सोशल कांफिलिक्ट फ्री प्रेस: न्यूयॉर्क
- डाहरडॉर्फ, राल्फ 1959, क्लास एण्ड क्लास कांफिलिक्ट इन इंडस्ट्रीयल सोसाइटी स्टेडफॉर्ड युनिवर्सिटी प्रेस: स्टेडफॉर्ड।
- एशलेमैन, जे.आर. और कैशन, बी.सी. 1983 सोशालॉजी: एन इंट्रोडक्शन लिटिल ब्राउन एण्ड कॉर्पोरेशन: बोस्टन
- हॉटन, पी.बी. एण्ड हंट, सी.एल. 1981. सोशियोलॉजी मेक ग्रा हिल: लंदन।
- आई ई एस एस, 1972, इंटरनेशनल एनसाइक्लोपीडीया ऑफ सोशल साइंस। डेविड आई सिल्स (सम्पादक) मैकमिलन: न्यूयॉर्क

- जोनसन, एच. 1986 सोशियोलॉजी: सिस्टेमैटिक इंट्रोडक्शन एलाइड पब्लिशर: बॉम्बे।
- मैकलेवर, आर. एम. और पेज, सी.एच. 1985 सोसाइटी मैकमिलन: नई दिल्ली।
- मर्टन, आर, 1968 सोशल थ्योरी एण्ड सोशल एट्रेक्चर एमरिंग पब्लिकेशन कंपनी नई दिल्ली।
- ओरबन, डब्ल्यू वी. और निमकोफ 1979 ए हैंडबुक ऑफ सोशियोलॉजी यूरेशिया पब्लिशिंग हाऊस: नई दिल्ली।
- परेटो, वी., 1935, द मांड एण्ड सोसाइटी, जोनाथन केप, लंदन।
- क्विन्नी, रिचर्ड, 1970 द सोशल रियलिटी ऑफ करार्इम लिटिल ब्राऊन: बोस्टन।
- शर्मा, एस.सल. (संपादक) 1986 डेवलपमेंट : सोशियो कल्चरल डाइमेंशनस रावत पब्लिकेशन जयपुर।
- सोरोकिन, पी.ए. 1937 सोशल एण्ड कल्चरल डायनेमिक्स फ्री प्रेस: न्यू यॉर्क
- स्पेंगलर, ओसवाल्ड 1945 द डिकलाइन ऑफ वेस्ट (2 वालयुमस) नोफ: न्यू यॉर्क
- सदरलैंड, ई. एच. 1937 द प्रोफेशनल थिफ युनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस: शिकागो
- एसटेस, रिचर्ड जे. 1992 एट द ग्रेसरोडस : डेलीमास इन डेवलपमेंट टुवर्डस प्रेजर, न्यू यॉर्क (यह भी देखें www.google.com-three worlds of Development)

THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 11 स्वतंत्रता के रूप में विकास*

इकाई की रूपरेखा

- 11.0 उद्देश्य
- 11.1 प्रस्तावना
- 11.2 विकास क्या है? आर्थिक संवृद्धि या स्वतंत्रता
- 11.3 प्रतिनिधित्व, क्षमता और अधिकार : स्वतंत्रता को समझना
 - 11.3.1 एजेंसी और स्वतंत्रता
 - 11.3.2 स्वतंत्रता के रूप में विकास: समर्थता परिप्रेक्ष्य
 - 11.3.3 अधिकार
- 11.4 क्षमता, अधिकार तथा कल्याण : लिंग परिप्रेक्ष्य
- 11.5 मूल्यांकन व निर्धारण : विकास की समीक्षा
- 11.6 सारांश
- 11.7 प्रमुख शब्द
- 11.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें
- 11.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्नांकित बिन्दुओं को समझने में सक्षम होंगे:

- सकल राष्ट्रीय उत्पाद की संवृद्धि से व्यक्तिगत विकास, व्यक्तिगत आय में वृद्धि, प्रौद्योगिकी व औद्योगिक तथा सामाजिक आधुनिकीकरण में अंतर करना।
- मानव क्षमता और एजेंसी के विचार में निहित स्वतंत्रता की व्याख्या करना
- स्वतंत्रता के विभिन्न अर्थों और विकास के साथ इसके संबंधों पर विस्तृत व्याख्या करना
- व्यक्तिगत क्षमता और स्वतंत्रता के लिए महत्वपूर्ण आयाम के रूप में अधिकारों पर ध्यान केंद्रित करना
- महिलाओं की स्वतंत्रता और एजेंसी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण कारक के रूप में क्षमता व अधिकारों पर सविस्तार व्याख्या करना
- विकास के मापन तथा मूल्यांकन में सेन के परिप्रेक्ष्य की प्रभावकारिता पर ध्यान केंद्रित करना।

11.1 परिचय

अमर्त्य सेन लोगों की मौलिक स्वतंत्रता के विस्तार की प्रक्रिया के रूप में विकास से संबंधित एक दृष्टिकोण प्रस्तावित करते हैं। ऐसा करने में वह विकास की सामान्य समझ से परे अर्थात्

*कनिका कक्कड़ द्वारा लिखित।

भौतिक धन, तकनीकी तथा औद्योगिक उन्नति, सामाजिक आधुनिकीकरण द्वारा संकेतित आर्थिक वृद्धि/समृद्धि के विचार प्रस्तुत करते हैं। निम्नलिखित, खंड 11.2 में यह विस्तार से बताया गया है कि सेन का दृष्टिकोण आर्थिक स्पष्टीकरण में निहित विकास की सामान्य तथा पारंपरिक समझ पर कैसे सवाल उठाता है। यह आर्थिक विकास या तकनीकी प्रगति पर ध्यान देने वाले दृष्टिकोण की तुलना में किसी भी समुदाय के विकास के स्तर का मूल्यांकन करने के लिए एक बेहतर आधार प्रदान करता है।

खंड 11.3 में सेन द्वारा व्याख्यायित स्वतंत्रता के अर्थ पर विस्तार से चर्चा की गयी है। यहाँ इस तथ्य पर प्रकाश डाला गया है कि अभिक्रमों (एजेंसी) क्षमता और अधिकार स्वतंत्रता तथा विकास को समझने के केंद्रबिंदु हैं। इसके अतिरिक्त, यह स्वतंत्रता के विभिन्न रूपों पर ध्यान केंद्रित करता है, जो दोनों यथा क्षमताओं व साधनों तथा विकास के साधनों में दिखाई देने वाले विकास के परिणाम के रूप में प्रकट होता है।

अगला खंड 11.4 लैंगिक दृष्टिकोण से क्षमता, अधिकार तथा कल्याण की जांच करता है। यह दर्शाता है कि महिलाओं की एजेंसी और अधिकार उनके कल्याण, सशक्तिकरण और सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। खंड 11.5, सेन के विकास के संचालन दृष्टिकोण पर तथा स्वतंत्रता के रूप में विभिन्न मूल्यपरक सूचकांक में विकास के मूल्यांकन और कल्याण के उपायों पर प्रकाश डालता है।

11.2 विकास क्या है? आर्थिक विकास या स्वतंत्रता

अमर्त्य सेन ने अपने लेखन कार्य “डेवलपमेंट एज फ्रीडम” (1999) में विकास की अवधारणा को व्यक्ति के मौलिक स्वतंत्रता के विस्तार की प्रक्रिया के रूप में प्रस्तावित किया। यह लेखन कार्य इस बिंदु पर विस्तार से चर्चा करता है कि वास्तव में विकास से क्या तात्पर्य है इसके लिये वह प्रश्न करता है कि क्या विकास केवल आर्थिक विकास है या क्या यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता के विस्तार का एक बहुत बड़ा उद्देश्य है?

बॉक्स 11.1

अमर्त्य सेन

अमर्त्य सेन एक विकास अर्थशास्त्री तथा दार्शनिक हैं। इनका जन्म 1933 में शांतिनिकेतन, भारत में हुआ था। ये वर्तमान में हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र व दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर हैं। इन्हें 1998 में अर्थशास्त्र में नोबेल मेमोरियल पुरस्कार और 1999 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया था।

आर्थिक विकास/समृद्धि के रूप में विकास का विचार द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात लोकप्रिय हो गया। यह विकास को आर्थिक विकास के रूप में निर्धारित करता था, जो कि सकल राष्ट्रीय उत्पाद, प्रति व्यक्ति आय और औद्योगिकीकरण जैसे संकेतकों के रूप में दिखाई देता है। स्वतंत्रता के रूप में विकास की अवधारणा ने पारंपरिक समझ का खंडन किया, जिसमें विकास को आर्थिक विकास व समृद्धि के पर्याय के रूप में समझा जाता है। इसके विपरीत, पारंपरिक दृष्टिकोण जो आर्थिक चरों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, मौलिक स्वतंत्रता के विस्तार के संदर्भ में विकास को देखने के कारण विकास की प्रक्रिया के साधनों से हमारा ध्यान हटा देता है जो विकास को महत्वपूर्ण और वांछनीय बनाते हैं।

परम्परागत ज्ञान: आधुनिकीकरण और निर्भरता परिप्रेक्ष्य

आधुनिकीकरण का दृष्टिकोण विकास की पारंपरिक समझ का समर्थन करता है जो कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद 1950 व 1960 के दशक में गैर-मार्क्सवादियों द्वारा तीसरी दुनिया के लिए प्रयुक्त किया गया। इसने विकास के आर्थिक सूचकांकों पर बल देते हुए औद्योगिकीकरण तथा तकनीकी विकास में निवेश के पश्चिमी अनुभव के आधार पर पारंपरिक समाजों के आधुनिक में रूपांतरित होने की प्रक्रिया को समझाया। 1970 के दशक में निर्भरता का परिप्रेक्ष्य उभरने के साथ आधुनिकीकरण के परिप्रेक्ष्य ने अपनी लोकप्रियता लुप्त कर दी। निर्भरता परिप्रेक्ष्य विकास के आधुनिकीकरण दृष्टिकोण के लिए एक मार्क्सवादी आलोचना प्रदान करता है। इसने संकेत दिया कि आधुनिकीकरण से औद्योगिक विकास और सामाजिक लाभ के समान वितरण की संभाव्यता नहीं है, क्योंकि यह अनिवार्य रूप से असमान प्रक्रिया है और इसके परिणामस्वरूप आर्थिक निर्भरता और तीसरी दुनिया के देशों में अविकसितता बढ़ी है। आधुनिकीकरण और निर्भरता दोनों दृष्टिकोण सरल और संकीर्ण हैं क्योंकि वे आर्थिक संकेतकों से परे विकास का अनुभव करने में विफल रहते हैं। स्वतंत्रता के रूप में विकास अतिव्यापक व विस्तृत है क्योंकि यह विकास का गुणात्मक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है।

विकास को समझने के लिए सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी) या औद्योगिकीकरण में वृद्धि जैसे संकेतकों पर निर्भर होना, एक संकीर्ण ज्ञान को दर्शाता है। मात्र आर्थिक संकेतकों वृद्धि पर ध्यान केंद्रित करने से अन्य चरों की अनदेखी होती है जो विकास के अनुकूल होते हैं जैसे कि कुछ राजनीतिक या सामाजिक स्वतंत्रता, यथा राजनीतिक भागीदारी और असंतोष की स्वतंत्रता, या बुनियादी शिक्षा या स्वास्थ्य देखभाल प्राप्त करने के अवसर आदि। स्वतंत्रता तथा अधिकार विकास के घटकों के मध्य तथा सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी) के विकास को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करके या औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देने के द्वारा आर्थिक प्रगति में योगदान करने में प्रभावी हैं। यह निम्नलिखित तरीके से चित्रित किया जा सकता है

- सर्वप्रथम, यह आवश्यक नहीं है कि प्रति व्यक्ति आय और व्यक्तिगत रूप से लंबा व अच्छी तरह से जीने की स्वतंत्रता के बीच सर्वदा एक संबंध होगा। उदाहरण के लिए, गैबॉन या दक्षिण अफ्रीका या नामीबिया या ब्राजील के नागरिक श्रीलंका या चीन या भारत के केरल राज्य के नागरिकों की तुलना में प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी) के मामले में अधिक समृद्ध हो सकते हैं, लेकिन परवर्ती में पूर्ववर्ती की अपेक्षा बहुत अधिक जीवन प्रत्याशा है। यह अपर्याप्त स्वास्थ्य देखभाल, सार्वजनिक सुरक्षा की कमी और देशों की पूर्व श्रेणी में राजनीतिक अस्थिरता के मामले में उल्लेखनीय हो सकता है। इसी तरह, अमेरिका में अफ्रीकी अमेरिकी तीसरी दुनिया के लोगों की तुलना में अधिक अमीर हैं, लेकिन उनके पास नस्लीय हिंसा व भेदभाव से सुरक्षा की चाह में परिपक्व उम्र तक पहुंचने की कम संभावना है, जैसे चीन, या श्रीलंका या भारत के कुछ भागों में बहुत से तीसरी दुनिया के लोग करते हैं।
- एक और उदाहरण जो सेन की विकास की आर्थिक समझ पर प्रश्न खड़ा करता है, वह बाजार की भूमिका पर केंद्रित है। आर्थिक वृद्धि और समग्र आर्थिक प्रगति के लिए बाजार तंत्र का योगदान अच्छी तरह से स्थापित है। हालांकि, स्वतंत्रता के परिप्रेक्ष्य में विकास बाजारों के बहुत व्यापक और समावेशी परिप्रेक्ष्य को आमंत्रित

करता है और बाजार तंत्र पर सरल निर्भरता को दोहराता है। इसके अनुसार इसमें भाग लेने के लिए स्वतंत्रता के प्रत्यक्ष महत्व के बाद ही बाजार तंत्र आर्थिक प्रगति के लिए सार्थक है। श्रम बाजार में भाग लेने की स्वतंत्रता की अस्वीकृति लोगों को बंधन और कैद में रखने के तरीकों में से एक है। इसे अलग तरीके से देखा जाये तो, बाजारों में प्रवेश करने की स्वतंत्रता ही विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। आज विकासशील देशों की महत्वपूर्ण चुनौती में श्रम को दृष्ट या निहित बंधन से मुक्त करने की आवश्यकता शामिल है जो खुले श्रम बाजार तक श्रम की पहुंच से इनकार करता है। जैसे गुलामी को समाप्त करने के लिए गृह युद्ध से पहले अमेरिका में होता था। इसी तरह, उत्पाद बाजारों तक पहुंच प्रतिबंध अक्सर अभावों के समान होता है जिसके लिए कई छोटे किसान और संघर्षशील उत्पादक पारंपरिक व्यवस्था और प्रतिबंधों के तहत पीड़ित होते हैं। आर्थिक आदान-प्रदान और विनिमय में भाग लेने की स्वतंत्रता की सामाजिक जीवन में बुनियादी भूमिका है।

इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि आय तथा उपलब्धियों के बीच, वस्तुओं तथा क्षमताओं के बीच और आर्थिक संपत्ति तथा जीने की क्षमताओं के बीच एक संबंध है, यह संबंध बहुत मजबूत हो सकता है या नहीं भी हो सकता है तथा अन्य परिस्थितियों में आकस्मिक हो सकता है। संक्षेप में, विकास को आर्थिक संपत्ति और समृद्धि के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए। दो दृष्टिकोणों के मध्य अंतर है अर्थात् आर्थिक संपत्ति पर विशेष एकाग्रता तथा जीवन के व्यापक केंद्रबिन्दु के बीच हम वैचारिक विकास में नेतृत्व कर सकते हैं।

बोध प्रश्न 1

1. एक उदाहरण के साथ वृद्धि तथा विकास के बीच अंतर स्पष्ट करें। (दो वाक्यों में व्याख्या करें)
.....
.....
2. दो उदाहरणों से उल्लेखित करिए जो इस दृष्टिकोण को चुनौती देते हैं कि विकास आर्थिक समृद्धि तथा राष्ट्र की संपत्ति से संबंधित है। (2-3 वाक्यों में व्याख्या करें))
.....
.....

11.3 एजेंसी, क्षमता और प्रवेश: स्वतंत्रता को समझना

11.3.1 एजेंसी और स्वतंत्रता

सेन के अनुसार, स्वतंत्रता अपने आप में विकास का एक मूल घटक है और अन्य पहलुओं के लिए एक सक्षम समाधान है। विकास के साधन व सीमा को स्वतंत्रता के परिप्रेक्ष्य में केंद्र में रखने का सुझाव देते हैं। दूसरे शब्दों में, व्यक्तिगत स्वतंत्रता विकास, कार्यप्रणाली तथा विश्लेषण के मूलभूत अंग हैं।

कल्याण का दृष्टिकोण बनाम विकास का क्षमता परिप्रेक्ष्य

कल्याण का दृष्टिकोण व्यक्ति को एक लाभार्थी के रूप में या सभी विकास की गतिविधियों के केन्द्र में रखता है। यहाँ राज्य और गैर राज्य अभिक्रमों (agency) से विकास सामाजिक

क्षेत्रक व्यय और आपूर्ति कल्याण उत्पादों में निवेश करने की वकालत करता है यह मनुष्यों की आधारभूत आवश्यकताओं जैसे खाना, कपड़ा, आश्रय और पीने का पानी आदि को चिन्हित करने पर और उन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये प्रत्यक्ष सार्वजनिक प्रावधान की क्रिया में संलग्न होने पर ध्यान केंद्रित करता है। इस प्रकार यह दृष्टिकोण व्यक्तियों को विकास के निष्क्रिय लाभार्थी के रूप में दर्शाता है। इसके विपरीत क्षमता परिप्रेक्ष्य व्यक्तियों की क्षमता और उनकी आवश्यकताओं के बीच के सामंजस्य को पहचानता है। ऐसा करने में यह व्यक्तियों की कुछ अवस्थिति में भिन्नता को ध्यान में रखता है। जो मनुष्य में उनकी आयु, लिंग, जाति वर्ग, प्रजाति और अन्य विशिष्टताओं के संबंध में देखने को मिलती है, जो विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये उपयुक्त समान क्षमता के समुच्चय को प्रभावित कर सकती है।

विकास प्रक्रिया की स्वतंत्रता—केंद्रित समझ बहुत हद तक प्रतिनिधि—उन्मुख दृष्टिकोण है। यह व्यक्ति को 'असहाय' या विकास कार्यक्रम के परिणामों के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के रूप में नहीं रखता है। इसके स्थान पर, यह एजेंसी के प्रयोग करने तथा विकास की प्रक्रिया में भाग लेने की उसकी क्षमता पर केंद्रित है। यह एक उर्ध्वगामी दृष्टिकोण है और कल्याण के विचार के आधार पर शीर्ष—पाद विकास/योजनाओं से बहुत परे है और लोगों को उनके कल्याण के लिए क्षुद्र अंश प्रदान करता है। राज्य और समाज की मानवीय क्षमताओं को मजबूत करने और उनकी सुरक्षा करने में व्यापक भूमिकाएँ हैं। यह बने बनाये प्रतिपादन की अपेक्षा एक सहायक और सशक्त भूमिका है।

बॉक्स 11.3

विकास के लिए कल्याण दृष्टिकोण बनाम क्षमता दृष्टिकोण

कल्याण दृष्टिकोण व्यक्ति को लाभार्थियों के रूप में या समस्त विकास गतिविधियों के लक्ष्य के रूप में केंद्रित है। यह राज्य और गैर-राज्य एजेंसियों को सामाजिक क्षेत्र में निवेश करने और विकास के लिए कल्याणकारी उत्पादों की आपूर्ति करने की हिमायत करता है। यह भोजन, कपड़े, आश्रय और पीने के पानी आदि में व्यक्तियों की बुनियादी आवश्यकताओं के अभिनिर्धारण पर केंद्रित है साथ ही उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रत्यक्ष सार्वजनिक प्रावधान प्रक्रिया में संलग्न है। इस प्रकार यह दृष्टिकोण विकास के निष्क्रिय प्राप्तकर्ताओं के रूप में उपस्थित व्यक्तियों पर केंद्रित है। इसके विपरीत, क्षमता परिप्रेक्ष्य व्यक्तियों की क्षमताओं और उनकी आवश्यकताओं के बीच सामंजस्य को स्वीकार करता है। ऐसा करने में यह उनकी उम्र, लिंग, जाति, वर्ग और नस्ल और अन्य विशेषताओं के संबंध में व्यक्तियों की स्थिति के अंतर को ध्यान में रखता है, जो विभिन्न आवश्यकताओं की प्राप्ति के लिए क्षमताओं के समान वर्ग का उपयोग करने को प्रभावित कर सकता है।

अमर्त्य सेन के लिए विकास का उद्देश्य स्वतंत्रता है और इसे प्राप्त करने के लिए स्वतंत्र मानव एजेंसी का चलन एक अंतिम साधन है। इस संदर्भ में यह समझना महत्वपूर्ण हो जाता है कि सेन का अभिप्राय एजेंसी से क्या है। सेन ने कहा कि एक अभिकर्ता (एजेंट) के रूप में एक व्यक्ति अपने मूल्यों और विचारों के अनुसरण में अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को स्थापित करने के लिए अपनी ओर से कार्य कर सकता है। नतीजतन, एक एजेंट निर्णय लेने और अपने जीवन पर प्रभाव डालने वाले कार्यों को करने की क्षमता वाला एक जिम्मेदार व्यक्ति है। व्यक्तिगत एजेंसी विकास के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि एक अभिकर्ता (एजेंट) के रूप में एक व्यक्ति एक जिम्मेदार और विकल्पों का मूल्यांकन करने में सक्षम है। हालांकि, इसका मतलब यह नहीं है कि एक एजेंट एक तर्कसंगत कर्ता है, जिसकी पसंद उपयोगिता को महत्व देने

के लिए प्राथमिकताओं पर आधारित है। वरन्, यह एक व्यक्ति के आंतरिक मूल्य और विचार हैं जो उसकी पसंद और कार्यों का मार्गदर्शन करता है। व्यक्तिगत एजेंसी इसलिए, सामाजिक संरचना के बल का प्रतिबिंब है। यह सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था के प्रभावों से मुक्त नहीं है और यह इन्हीं से आकार पाता है। सेन के लिए, एजेंसी की स्वतंत्रता को बढ़ावा देना आवश्यक है, जिससे व्यक्ति तर्कपूर्ण तथा सूचनाबद्ध विकल्प बनाते हैं साथ ही निर्णय का प्रारूप विकास का व्यापक उद्देश्य है।

11.3.2 स्वतंत्रता के रूप में विकास: एक क्षमता परिप्रेक्ष्य

एक व्यक्ति के लिए (एजेंसी) के रूप में कार्य करने के लिये उसमें क्षमताओं के साथ निहित होना चाहिए। इस प्रकार क्षमताएं सेन के लिए एक एजेंट के रूप में कार्य करने की किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता की धारणा के लिए मौलिक हैं। स्वतंत्रता के रूप में विकास का मूल प्रस्ताव एक व्यक्ति की क्षमताओं का विस्तार है जिससे वह उस तरह के जीवन जी सके जिसमें वह मूल्यों का पालन करता है। क्षमताएं स्वतंत्रता के रूप हैं जो किसी व्यक्ति की क्षमता या कार्य के साथ निहित होती हैं। संक्षेप में, सेन के अनुसार, स्वतंत्रता एक व्यक्ति की क्षमता में परिलक्षित हो सकती है। सेन के दृष्टिकोण में स्वतंत्रता एक अस्पष्ट और एक बहुत सी परतों वाली अवधारणा है, जिसमें पर्याप्त / कार्यात्मक क्षमताएं और संवैधानिक / सहायक मूल्य दोनों अंतर्निहित हैं, जो दोनों अवसर प्रदान करते हैं वास्तविक जो एक व्यक्ति के पास हैं और प्रक्रियाएं जो उसे एजेंसी और निर्णय लेने की अनुमति देती हैं।

प्रमुख स्वतंत्रताएं: लक्ष्य / विकास के प्रयोजन

मौलिक स्वतंत्रताएं वास्तविक स्वतंत्रताएं हैं जो एक व्यक्ति के पास हैं, जो उसे जीवन और एजेंसी के प्रयोग के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में पूरी तरह से भाग लेने की अनुमति देती हैं। सेन ने जीवन की गुणवत्ता के बारे में अपनी समझ अरस्तू की धारणाओं 'समृद्धशाली' व 'क्षमता' तथा एडम स्मिथ के 'आवश्यकताओं' के विश्लेषण और जीवन जीने की परिस्थितियों से महत्वपूर्ण स्वतंत्रता की समझ से प्राप्त की है। (पृष्ठ 24)

मौलिक स्वतंत्रता का सकारात्मक मूल्य है क्योंकि ये किसी व्यक्ति के जीवन को सकारात्मक बनाते हैं, उसे समृद्ध बनाते हैं तथा उसे एक पूर्ण सामाजिक व्यक्ति बनाते हुए, उसे अपनी स्वयं की महत्वाकांक्षाओं, क्षमता को सुचिन्तित करते हैं तथा उस दुनिया को प्रभावित करता है जिसमें वह रहता है। (पृष्ठ 14-15)। लोग आर्थिक स्वतंत्रता में संलग्न होने के लिए या राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए या बुढ़ापे तक जीने की क्षमता या बुनियादी शिक्षा या स्वास्थ्य देखभाल प्राप्त करने के लिए कार्यात्मक क्षमताओं में बहुत अधिक स्वतंत्रता का मूल्य रखते हैं। इस प्रकार ये स्वतंत्रताएं अवसर के पहलू को दर्शाती हैं। वे आय धन, वस्तुओं और परिसंपत्तियों या अन्य चीजों जैसे संसाधनों तक पहुंच से अलग हैं जो आनंद, सुख, संतुष्टि और खुशी प्रदान करने में सक्षम होने के मद्देनजर उनकी उपयोगिता के लिए मूल्यवान और वांछनीय पाए जाते हैं।

इसके अतिरिक्त, सेन ने बताया कि स्वतंत्रता से अभिव्यक्ति की क्षमता प्रकट होने की संभावना है और इसलिए, सर्वदा कल्याण के साथ भ्रमित होने की आवश्यकता नहीं है। इस बिंदु को समझाने के लिए वह भुखमरी और उपवास का उदाहरण प्रदान करता है। उपवास और भुखमरी दोनों समान हैं जो व्यक्ति के (शारीरिक) भरण-पोषण से वंचित कर उसे चुनौती देते हैं। हालांकि, उपवास के मामले में, यदि व्यक्ति चाहे तो खा सकता है, जबकि एक भूखा व्यक्ति यदि खा सकता है वह खाना खायेगा। भुखमरी एक प्रतिकूल स्थिति है क्योंकि यह उपवास के विपरीत क्षमता से इनकार करती है।

सेन के लिए, मौलिक स्वतंत्रता में विकास योजना और सार्वजनिक नीति का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य होना चाहिए। इन्हें समाहित करने के लिए विकास कार्यक्रमों को तैयार किया जाना चाहिए। मौलिक स्वतंत्रता के दृष्टिकोण से, सेन केवल कम आय की ओर जाने के स्थान पर क्षमता-अभाव के रूप में गरीबी पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यह एक परिस्थिति है, जो विभिन्न नकारों में निहित है जो एजेंसी से व्यक्तियों को वंचित करते हैं यह उनके अप्रसन्नता का निमित्त बनता है। विकास की योजना में गरीबी, दयनीय आर्थिक अवसरों और सामाजिक अभाव यथा अधीनता के स्रोतों को संबोधित करना चाहिए, जो किसी व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से प्रयोग करने वाली एजेंसी से रोकता है।

सोचें और करें 1

गरीबी के कारण होने वाली बुनियादी क्षमताओं के अभाव पर चिंतन करें तथा उन्हें अपनी नोटबुक में सूचीबद्ध करें।

अंगभूत/संघटन/रचक/सांविधानिक स्वतंत्रता: यांत्रिक/विकास के साधन

सेन के अनुसार किसी व्यक्ति को गरीबी वित्तीय संसाधनों की कमी, सरकारी नियंत्रण/प्रतिबंध और जागरूकता की कमी आदि के कारण स्वतंत्रता की कई क्षमताओं से वंचित किया जा सकता है। इस संदर्भ में वह सकारात्मक स्वतंत्रता की प्र.ति के बारे में बात करता है जिसकी संघटन और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है।

किसी व्यक्ति को कार्य पूर्ण करने के लिए स्वतंत्रताएं महत्वपूर्ण होती हैं जो एक साधन/सांविधानिक भूमिका निभाती हैं। व्यक्तियों की क्षमता की उन्नति के लिए अंगभूत/यांत्रिक स्वतंत्रता महत्वपूर्ण होती है। ये एक व्यक्ति के लिए बाहरी कारकों पर निर्भर करते हैं जो व्यक्तिगत क्षमताओं के विस्तार के आधार पर एजेंसी के प्रयोग को स्थान प्रदान करते हैं। दूसरे शब्दों में, वे उपलब्ध संस्थागत व्यवस्थाओं और मूल्यों के रूप में परिलक्षित होने वाली प्रक्रिया/साधन हैं जो मूलभूत स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण हैं।

अनेक भिन्न-भिन्न स्वतंत्रताएं हैं जो विभिन्न अनुभवजन्य संदर्भों को ध्यान में रखते हुए मानव क्षमताओं और महत्वपूर्ण एजेंसी को प्रोत्साहित करने में प्रभावी हो सकती हैं। सेन, मौलिक के रूप से पांच अलग-अलग प्रकार के यांत्रिक स्वतंत्रता की पहचान करते हैं। ये क्रमशः हैं—

- राजनीतिक स्वतंत्रता लोकतांत्रिक राजव्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है। इसे राज्य या इसी तरह की एजेंसी द्वारा बाहरी या आंतरिक प्रतिरोधी नियम से अनुपस्थित बताया जा सकता है। यह राजनीतिक अधिकारों और नागरिक स्वतंत्रता का पर्याय है, जिसको सामान्यतः राज्य से कानूनी संरक्षण प्राप्त होता है।
- आर्थिक सुविधाओं में जमा धन/वित्तपोषण सेवाओं तथा बाजारों तक पहुंच समाविष्ट है।
- सामाजिक अवसर में स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा तथा सामाजिक सेवाएं शामिल हैं।
- पारदर्शिता गारंटी व्यापार तथा सरकार के व्यवहार में खुलेपन और प्रकटीकरण की आवश्यकता से संबंधित है। ये भ्रष्टाचार व वित्तीय गैरजिम्मेदारी को रोकने तथा निष्पक्षता का परिचय देने के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- रक्षात्मक सुरक्षा व्यवस्था व्यक्तियों को सुरक्षा प्रदान करने से संबंधित है जैसे कि बेरोजगारी हित लाभ (बेरोजगारी भत्ता), अकाल महामारी राहत आदि।

सेन, यांत्रिक स्वतंत्रताओं की पूरकता और अंतर्संबंध पर ध्यान आकर्षित करते हैं। वह कहते हैं कि विकास की योजना को उन विशिष्ट संबंधों पर ध्यान देना चाहिए जो अलग-अलग प्रकार की स्वतंत्रता को एक साथ जोड़ते हैं, उनके संयुक्त महत्व को मजबूत करते हैं। (पृष्ठ 10) इस प्रकार क्रमिक स्वतंत्रताओं के विस्तार की दिशा में किए गए कार्यक्रम संबंधी हस्तक्षेपों को विभिन्न प्रकार के यांत्रिक स्वतंत्रता, अर्थात् आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक को एकीकृत करके एक समावेशी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। यह महत्वपूर्ण और पूरक भूमिकाओं को केंद्र में लाएगा, जो कि सरकार, राजनीतिक दलों, बाजारों और संबंधित संगठनों और नागरिक संगठनों जैसे विभिन्न संस्थान व्यक्तिगत क्षमताओं के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

सोचें और करें 2

कोविड –19 जैसी समकालीन महामारी के समय में प्रवासी श्रम की स्थिति का अवलोकन करते हुए, एक पृष्ठ में स्पष्ट करें कि किस प्रकार उनकी आर्थिक विपन्नता ने उन्हें अन्य प्रकार की स्वतंत्रता के भंजन से असहाय पीड़ित बना दिया है।

11.3.3 अधिकार पात्रता (हकदारी)

अधिकार सेन के विकास की क्षमता के रूप में स्वतंत्रता की धारणा का एक और पहलू है। सेन, अधिकार को एक प्रकार की क्षमता के रूप में देखते हैं, जो किसी व्यक्ति को वैधता के कुछ नियमों के माध्यम से वस्तुओं पर स्वामित्व और आदेश स्थापित करने की अनुमति देता है। इस संदर्भ में, वह कुपोषण, क्षुधा, भुखमरी के उदाहरण देते हैं, जिसे अकाल की स्थिति में शामिल किया जा सकता है, जिन्हें परतंत्रता के उदाहरण के रूप में रखा जा सकता है। इसका कारण वह बताते हैं कि, न केवल खाद्य उत्पादन में कमी के कारण कृषि योग्य कृषि उत्पादों में कमी हो सकती है, बल्कि उन अधिकारों की समस्याएं भी हैं जो किसी व्यक्ति की आवश्यकतानुसार तथा पर्याप्त भोजन प्राप्त करने की क्षमता को प्रभावित करते हैं। एक व्यक्ति की क्षमता के रूप में पात्रता विभिन्न प्रभावों के अधीन होती है जैसे:

- श्रम शक्ति सहित संपत्ति या उत्पादक संसाधनों पर बंदोबस्ती या स्वामित्व जिसका बाजार में प्रभावशाली मूल्य के आधार पर विनिमय मूल्य होता है।
- उत्पादन के संबंध में तकनीकी-जानकारी का अधिकार
- बाजार में वस्तुओं व सेवाओं के आदान-प्रदान करने की क्षमता, तथा
- राज्य और सरकारी एजेंसियों द्वारा किए गए आबादी के सामान्य कल्याण के एक भाग के रूप में सामाजिक सुरक्षा की उपस्थिति या अनुपस्थिति।

इस संदर्भ में देखा जाए तो भुखमरी और क्षुधा (अकाल) केवल भोजन की कमी के अलावा अन्य कारकों के संदर्भ में उल्लेखनीय हो सकती है। इसे भिन्न प्रकार से समझा जाया तो, भुखमरी और अकाल तब भी संभव हो सकती है जब खाद्य उत्पादन और आपूर्ति में गिरावट न हो और बाजार अच्छी तरह से काम कर रहे हो।

गरीबों को मजदूरी के लिए पर्याप्त अधिकार संरक्षण प्रदान करके भुखमरी और क्षुधा को कम किया जा सकता है, उदाहरण के लिये मजदूरी तथा रोजगार के रूप में साथ ही पीड़ितों को क्षमता परिपेक्ष्य के अंशनुरूप एजेंटों के रूप में कार्यरत करना। यह लोकतंत्र के विचार से “सुरक्षात्मक सुरक्षा” के रूप में प्रतिध्वनित होता है, जो व्यक्तिगत एजेंसी और स्वतंत्रता को बढ़ाकर संकट दूर करने के लिए बुनियादी व्यवस्था के संस्थानों का पक्षधर है। यद्यपि, लोकतांत्रिक अधिकारों के सिद्धांत और व्यवहार में काफी असमानता हो सकती है, जो इसके

आलोचनात्मक विश्लेषण का आग्रह करता है। लोकतंत्र की क्षमता के वास्तविक उपयोग के लिए, जिसे विकास कार्यक्रमों और नीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन के संदर्भ में देखा जा सकता है, राजनीतिक व्यवस्था, दल-राजनीति के साथ-साथ प्रचलित मूल्यों और नैतिक तर्कों के अभ्यास और दृढ़ता पर निर्भर करता है। भारत और बांग्लादेश जैसे देशों में लैंगिक असमानता, महिलाओं में क्षमता और हकदारी की कमी का स्पष्ट होना, लोकतांत्रिक अधिकारों और विशेषाधिकारों के प्रभावी अभ्यास की विफलता को दोहराता है।

बोध प्रश्न 2

1. निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें

- अ. सेन ने अरस्तू की और एडम स्मिथ केविश्लेषण से मौलिक स्वतंत्रता की अपनी समझ प्राप्त की है।
- ब. सेन के लिए,..... विकास अभ्यास का व्यापक उद्देश्य है।
- इ. सेन के दृष्टिकोण में स्वतंत्रता एक अस्पष्ट और बहुस्तरीय अवधारणा है, जो दोनों में अंतर्निहित है
- द. सेन,की पहचान करते हैं विभिन्न प्रकार के यांत्रिक स्वतंत्रता को मौलिक रूप में।
- स. सेन, हकदारी को देखते हैं, के रूप में।

11.4 क्षमता, प्रवेश और कल्याण: एक लैंगिक अध्ययन

अमर्त्य सेन का क्षमता परिप्रेक्ष्य दृष्टिकोण महिलाओं की भलाई और लैंगिक असमानता का आंकलन करने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है, जो उपस्थिति और प्राप्त कार्य पद्धति की उपस्थिति और अनुपस्थिति के साथ है। उनके अनुसार, मुक्त एजेंसी वाली महिलाओं को अधिकार दिलाने और उनकी भलाई में योगदान देने में पात्रता की भूमिका महत्वपूर्ण है। स्वास्थ्य देखभाल, पोषण संबंधी जरूरतों और शिक्षा के अभाव और एजेंसी की कमी के कारण महिलाओं के लिए पात्रता अस्वीकृति प्रचलित मूल्यों और लैंगिक भेद मानदंडों के परिणाम हैं। ऐसे वंचित और उपेक्षा के गंभीर निहितार्थ एशिया के गरीब देशों में 'लापता महिलाओं' के संदर्भ में स्पष्ट हैं, जिन्होंने मृत्यु दर के आगे घुटने टेक दिए हैं। सेन, इस प्रकार दुनिया के गरीब देशों के प्रतिकूल लिंगानुपात के विषय में बात करते हैं जहां दीर्घायु के संदर्भ में महिलाओं के सापेक्ष जैविक लाभ, से क्षमता और पात्रता की गंभीर विफलताएं आगे निकल जाती हैं।

इसके अतिरिक्त, सेन, घरेलू और समाज में बड़े पैमाने पर सौदेबाजी की शक्ति पर सकारात्मक प्रभाव के लिये एजेंसी और महिलाओं की पात्रता पर ध्यान केंद्रित करते हैं। संसाधनों (भूमि या संपत्ति) के स्वामित्व के रूप में महिलाओं के अधिकार, श्रम बल में भागीदारी, शिक्षा तक पहुंच, घर के बाहर सौदेबाजी की शक्ति या निर्णय लेने वाली एजेंसी के रूप में महिलाओं की उत्तरजीविका क्षमता दोनों से जुड़े हुए हैं। इन पात्रताओं ने उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ ही निर्णय लेने वाली एजेंसी ही नहीं, बल्कि पोषण और स्वास्थ्य देखभाल के रूप में अच्छी हिस्सेदारी दी है। महिलाओं की एजेंसी उनकी प्रजनन क्षमता में कमी, बाल मृत्यु दर और बालिका विद्यालय छोड़ने की दर आदि के रूप में अन्य क्षमता सूचकांक पर उल्लेखनीय प्रभाव डालने की संभावना रखती है। इस प्रकार सामाजिक भलाई और विकास को बढ़ावा देने में महिलाओं की हकदारी और एजेंसी तक पहुंच महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

एजेंसी के सकारात्मक प्रभाव और महिलाओं के लिए हकदारी पर चर्चा करें? (विस्तृत रूप से बताएं)

11.5 मूल्यांकन तथा आंकलन: विकास समीक्षा

स्वतंत्रता के रूप में विकास के अमर्त्य सेन के दृष्टिकोण ने मानव विकास के मूल्यांकन तथा आंकलन के लिए मानक आर्थिक ढांचे का एक विकल्प प्रदान किया है जैसा कि पूर्व में बताया गया है। इसमें मानव क्षमता और स्वतंत्रता के विषय में कई पहलुओं की व्यवस्थित परीक्षण शामिल है। इसलिए, यह विकास मूल्यांकन के अभ्यास के लिए एक बहुलवादी अवधारणा प्रदान करता है। स्वतंत्रता पर ध्यान केंद्रित करते हुए, यह विकास, मूल्यांकन तथा आंकलन के लिए केंद्र के रूप में सामाजिक विकास, सशक्तिकरण, जिम्मेदारी और सूचित कार्यवाई जैसे गुणात्मक मानदंडों पर ध्यान आकर्षित करता है।

इसकी व्यापक रूपरेखा ने सकल राष्ट्रीय उत्पाद और सकल घरेलू उत्पाद के रूप में पारंपरिक एकान्त आय से संबंधित आर्थिक संकेतकों के संदर्भ में समान मूल्यांकन करने के स्थान पर मानव विकास पर अधिकार करने के लिए विभिन्न मूल्यांकन सूचकांक बनाने में एक प्रतिमान बदलाव प्रदान किया है। 1990 के दशक में विकास के मूल्यांकन में बदलाव का संचालन किया गया था, क्योंकि संयुक्त राष्ट्र की मानव विकास रिपोर्ट ने सेन के मानवीय स्वतंत्रता और क्षमता के परिप्रेक्ष्य को दर्शाते हुए लोगों के रहने के लिए सक्षम वातावरण बनाने को विकास का मूल उद्देश्य बताया। परिणाम मानव विकास सूचकांक (HDI) के निर्माण के रूप में सामने आया है, जिसमें सेन और यूएनडीपी द्वारा नियुक्त अन्य विद्वानों के सहयोग से महबूब उल हक द्वारा वितरण-संवर्धनशील उपाय का इस्तेमाल किया गया है, जो सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी) और सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के संदर्भ में दिखाई देने वाली विकास दर के उच्च के बावजूद स्तर वैश्विक असमानता, क्षमताओं से वंचित और निर्धनता के लिए वैश्विक मानव विकास की आलोचना कर रहा है। सेन के दृष्टिकोण ने विकास को अभिग्रहण करने के लिए विभिन्न अन्य गुणात्मक और क्षमता आधारित मानदंडों के निर्माण में एक प्रभावशाली भूमिका निभाई है, जैसे कि लैंगिक विकास सूचकांक (Gender Development Index), लैंगिक सशक्तिकरण उपाय (Gender Empowerment Measure), लैंगिक असमानता सूचकांक (Gender Inequality Index) और असमानता-समायोजित मानव विकास सूचकांक (Inequality-adjusted Human Development Index)।

सोचें और करें 3

मानव विकास सूचकांक (HDI), लैंगिक विकास सूचकांक (GDI), लैंगिक सशक्तिकरण उपाय (GEM), लैंगिक असमानता सूचकांक (GII) तथा असमानता-समायोजित मानव विकास सूचकांक (IHDI) पर एक लघु निबंध लिखें:

1. उन्हें कब प्रस्तावित किया गया था?
2. विकास को अभिग्रहण करने के लिए वे किस चर पर ध्यान केंद्रित करते हैं?

बोध प्रश्न 3

1. सेन द्वारा प्रस्तावित विकास और स्वतंत्रता की समझ को प्रतिबिंबित करने वाले मूल्यपरक सूचकांक तथा उपायों की सूची बनाएं? (विस्तृत व्याख्या करें)

2. मानव विकास सूचकांक (HDI), क्या है? (दो वाक्यों में स्पष्ट करें)

11.6 सारांश

इस इकाई में अमर्त्य सेन के विकास के सिद्धांत को स्वतंत्रता के रूप में सविस्तार प्रस्तुत किया है। स्वतंत्रता के रूप में विकास एक एजेंट-उन्मुख दृष्टिकोण है, जो व्यक्तिगत क्षमता और अधिकारों पर ध्यान केंद्रित करता है। स्वतंत्रता केंद्रित दृष्टिकोण विकास के लिए एक गुणात्मक समझ प्रदान करता है। यह विकास को एक सामाजिक चर के रूप में अर्थशास्त्र के दायरे से परे देखने की अनुमति देता है। स्वतंत्रता को कई रूपों में चित्रित किया गया है, जो मौलिक क्षमताओं तथा यांत्रिक मूल्यों के संदर्भ में विकास के लिए परिणाम व साधन दोनों के रूप में प्रकट होते हैं।

स्वतंत्रता के रूप में विकास महिलाओं के कल्याण तथा समुचित विकास पर ध्यान केंद्रित करने के लिए महत्वपूर्ण तरीके से प्रेरित करता है। ऐसा करने में यह महिलाओं और विकास के बीच के संबंध पर ध्यान केंद्रित करता है, क्योंकि उनके एजेंट होने के कारण तर्कपूर्ण विकल्प चुनने और पात्रता साथ में संपन्न होते हैं। इसके विपरीत, हकदारी तथा एजेंसी की अनुपस्थिति उनकी अधीनता की परिस्थितियों को दर्शाती है।

स्वतंत्रता केंद्रित परिप्रेक्ष्य विकास के प्रयोग में महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। यह विभिन्न मूल्यपरक सूचकांक तथा विकास पर अधिग्रहण करने के उपायों के लिए एक मार्गदर्शक शक्ति रहा है।

11.7 शब्दावली

बार्गेनिंग पावर (मोलभाव की शक्ति): यह मतभेद तथा हितों के टकराव द्वारा चिह्नित स्थिति में प्रभाव प्रबल करने की क्षमता है।

सशक्तिकरण: यह शक्ति, एजेंसी तथा सूचित विकल्प का उपयोग करने की क्षमता है।

बाजार: संस्थानों या सामाजिक संबंधों या खरीदारों तथा विक्रेताओं के बीच विनिमय लेनदेन द्वारा चिह्नित स्थान से निर्मित है।

दासता: अधीनता और बंधुआ श्रम के रूपों को संदर्भित करता है। यह उन स्थितियों से संबंधित है जिनमें संपत्ति कानून के सिद्धांत लोगों पर लागू होते हैं, जिससे व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को स्वयं खरीद और बेच सकते हैं।

11.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

इवांस, पीटर. 2002. "कलेक्टिव कैपिब्लिटीज, कल्चर एंड अमर्त्य सेनस् डेवेलपमेंट एज फ्रीडम" स्टडीज इन कम्परेटिव इंटरनेशनल डेवेलपमेंट, वॉल्यूम 37, नंबर 2, पृ0.54-60

फुकुदा पर, साकीको. 2003. "द हायूमन डेवलपमेंट पैराडिगम: ऑपरेशनलाइजिंग सेनस् आइडियाज ऑन कैपिबिलिटीज", फेमिनिस्ट इकोनॉमिक्स, वॉल्यूम 9, नं० 2-3, पृ०. 301-317

सेन, अमर्त्य. 1999. "डेवलपमेंट एज फ्रीडम", न्यूयॉर्क: अल्फ्रेड ए नोफ

डेवर्क्स,स्टीफन. 2001. "सेनस् एनटाइटिलमेंट अप्रोच: क्रिटिक्स एंड काउंटर-क्रिटिक्स", ऑक्सफोर्ड डेवलपमेंट स्टडीज, वॉल्यूम 29, नं० 3, पृ० .245-263।

11.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. अमर्त्य सेन द्वारा स्वतंत्रता के रूप में विकास की अवधारणा में पारंपरिक समझ का खंडन किया गया, जो विकास को आर्थिक विकास & समृद्धि के पर्याय के रूप में लेते हैं। यह राजनीतिक या सामाजिक स्वतंत्रता, जैसे कि राजनीतिक भागीदारी और असंतोष की स्वतंत्रता, या बुनियादी शिक्षा या स्वास्थ्य देखभाल प्राप्त करने के अवसर आदि जैसे व्यक्तियों की मूल स्वतंत्रता के विस्तार के संदर्भ में विकास को देखने पर केंद्रित है।
2. आर्थिक विकास और समृद्धि के अतिरिक्त विकास के दो उदाहरण हैं जो इस बात की पुष्टि करते हैं:
 - भारत में श्रीलंका या चीन या केरल राज्य के नागरिकों की तुलना में गैबॉन या दक्षिण अफ्रीका या नामीबिया या ब्राजील के लोग प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद के विषय में अत्यधिक समृद्ध हैं, लेकिन बाद में पूर्व की तुलना में बहुत अधिक जीवन की उम्मीदें हैं।
 - वर्तमान में कई विकासशील देशों में अच्छी तरह से स्थापित बाजार अर्थव्यवस्था हो सकती है, लेकिन उनके पास पूर्व प्रचलित अधीन & बंधुआ श्रम है जो कि खुले श्रम बाजार तक पहुंच से वंचित है जैसा कि अमेरिका में गुलामी को समाप्त करने के लिए गृह युद्ध से पहले था।

बोध प्रश्न 2

1. निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें:
 - अ. सेन के लिए, एजेंसी की स्वतंत्रता को बढ़ावा देना, जिससे व्यक्ति तर्कपूर्ण और सूचित विकल्प बनाते हैं और निर्णय विकास कार्यप्रणाली का निर्माण व्यापक उद्देश्य है।
 - ब. सेन की दृष्टि में स्वतंत्रता एक अस्पष्ट और बहुस्तरीय अवधारणा है, जो पर्याप्त & कार्यात्मक क्षमताओं और संवैधानिक & यांत्रिक मूल्य दोनों को अंतर्निहित करती है।
 - स. सेन ने जीवन की गुणवत्ता और एडम स्मिथ की आवश्यकताओं तथा जीवन की स्थितियों के विश्लेषण के संबंध में अरस्तू की धारणाओं को फलने-फूलने और क्षमता से मुक्त करने की अपनी समझ हासिल की है।
 - द. सेन, मौलिक रूप में पांच अलग-अलग प्रकार के यांत्रिक स्वतंत्रता की पहचान करते हैं।

इ. सेन क्षमता के रूप में हकदारी को देखते हैं, जो किसी व्यक्ति को वैधता के कुछ नियमों के माध्यम से कुछ वस्तुओं पर स्वामित्व और आदेश स्थापित करने की अनुमति देता है

बोध प्रश्न 3

1. महिलाओं के लिए एजेंसी और हकदारी के सकारात्मक निहितार्थ? (विस्तृत रूप से बताएं)

सेन घरेलू तथा समाज में बड़े पैमाने पर मोलभाव की शक्ति पर सकारात्मक प्रभाव होने के कारण एजेंसी तथा महिलाओं के अधिकारों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। संसाधनों (भूमि या संपत्ति) के स्वामित्व के रूप में महिलाओं के अधिकार, श्रम बल में भागीदारी, शिक्षा तक पहुंच, घर के बाहर और मोलभाव करने की शक्ति या निर्णय लेने वाली एजेंसी के बाहर जीवित रहने की उसकी क्षमता से दोनों जुड़े हुए हैं। इन अधिकारों ने उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ ही निर्णय लेने वाली एजेंसी ही नहीं, वरन् पोषण और स्वास्थ्य देखभाल के रूप में अच्छी हिस्सेदारी दी है। महिलाओं की एजेंसी में प्रजनन क्षमता में कमी, बाल मृत्यु दर और बालिका विद्यालय छोड़ने की दर आदि के रूप में अन्य क्षमता सूचकांक पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ने की संभावना है। इस प्रकार सामाजिक कल्याण तथा विकास को बढ़ावा देने में महिलाओं की हकदारी तथा एजेंसी तक पहुंच महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

बोध प्रश्न 4

1. विकास और स्वतंत्रता पर सेन की समझ को प्रतिबिंबित करने वाले मूल्य सूचकांक तथा विकल्पों के नामों की सूची बनाएं? (एक वाक्य में व्याख्या करें)

एचडीआई, जीडीआई जीईएम, जीआईआई और आईएचडीआई मूल्यांकन सूचकांक और विकल्प है जो विकास और स्वतंत्रता की सेन की समझ को दर्शाते हैं।

2. एचडीआई क्या है? (2 वाक्यों में स्पष्ट करें)

मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) एक वितरण-संवेदनशील उपाय है, जिसे अर्थशास्त्री, महबूब उल हक ने सेन और अन्य यूएनडीपी के कमीशन के साथ मिलकर तैयार किया है। इसने जीएनपी और जीडीपी के संदर्भ में विकास दर के उच्च स्तर के बावजूद निरंतर असमानता, क्षमताओं के अभाव और गरीबी पर वैश्विक मानव विकास पर प्रकाश डाला।

संदर्भ

इवांस, पीटर. 2002. 'कलेक्टिव कैपिलिटीज, कल्चर एंड अमर्त्य सेनस् डेवेलपमेंट एज फ्रीडम' स्टडीज इन कम्पैरेटिव इंटरनेशनल डेवेलपमेंट, वॉल्यूम 37, नंबर 2, पृ0.54-60

फुकुदा पर्र, साकीको. 2003. 'द हायूमन डेवेलपमेंट पैराडिगम: ऑपरेशनलाइजिंग सेनस् आइडियाज ऑन कैपिलिटीज', फेमिनिस्ट इकोनॉमिक्स, वॉल्यूम 9, नं0 2-3, पृ0. 301-317

सेन, अमर्त्य. 1999. 'डेवेलपमेंट एज फ्रीडम', न्यूयॉर्क: अल्फ्रेड ए नोफ

डेवर्क्स, स्टीफन. 2001. 'सेनस् एनटाइटिलमेंट अप्रोच: क्रिटिक्स एंड काउंटर-क्रिटिक्स', ऑक्सफोर्ड डेवेलपमेंट स्टडीज, वॉल्यूम 29, नं0 3, पृ0 .245-263।